उपनिषद्-सुधा बिन्दु

शान्तसंकल्पः सुमना यथा स्याद्वीतमन्युर्गौतमो माभि मृत्यो।
त्वत्प्रसृष्टं माभिवदेत्प्रतीत एतत् त्रयाणां प्रथमं वरं वृणे।।
(कठोपनिषद् : १/१/१०)

(नचिकेता ने कहाह्वह्व)''हे मृत्युदेवता! मेरे पिता गौतम (उद्दालक) मेरे प्रति क्रोधरहित, प्रसन्नचित्त तथा शान्तचित्त हो जायें। आपके द्वारा वापस भेजे जाने पर वह मुझे पहचान कर मेरे साथ प्रेमपूर्वक बातचीत करें। मैं तीनों वरों में से यह पहला वर माँगता हूँ।''

शिवानन्द स्तुतिः

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

हिमाद्रिप्रोत्तुङ्गामरसलिलसारामृतमया
जगन्माता गङ्गा वहति यत एनोहुतवहा।
महादुःखध्वान्तारुण ऋषिवरो भाति जगतः
शिवानन्दः स्वामी जलधिहृदयो जीवतु चिरम् ।।१।।

जहाँ जगन्माता गंगा अपने अमर जल सहित स्वर्गलोक से हिमालय के उच्च शिखरों में से होती हुई, अग्नि के समान समस्त पापों को जला कर नष्ट करती हुई प्रवाहित होती है, वहीं वे ऋषिवर संसार के महान् दुःखों के अन्धकार को सूर्य के समान नष्ट करते हुए दीप्तिमान हो रहे हैं। वे स्वामी शिवानन्द, जिनका हृदय सागर की भाँति विशाल है, दीर्घ आयुष्यमान हों!

ददाति प्रीणाति ज्ञ उरुकरणो ध्यायति मुनि–
र्दयासिन्धुः स्वात्मोदितसुखनिमग्नोऽखिलगुरुः।
क्वचिद्बालो रामः क्वचिदपि युवा वृद्धधिषणः
शिवानन्दः स्वामी जलधिहृदयो जीवतु चिरम् ।।२।।

वे दानशील हैं, प्रेम बाँटते हैं, सर्वज्ञाता हैं तथा ध्यान करते हैं। वे अद्भुत दिव्य कार्यों के स्रोत हैं। वे मुनि हैं, दया के सागर हैं। वे निज आत्मानन्द में निमग्न रहते हैं तथा सबके गुरु हैं। कभी–कभी वे बिलकुल बालवत् होते हैं और कभी अत्यन्त प्रसन्न मुद्रा में होते हैं। किसी समय वे पूर्णतया युवावस्था में दीखते हैं तो अन्य अवसर पर प्रौढ़ावस्था के व्यक्ति जैसे प्रतीत होते हैं। वे स्वामी शिवानन्द, जिनका हृदय सागर की भाँति विशाल है, दीर्घ आयुष्यमान हों!

महात्मा संन्यस्तद्वितयमतिसच्चित्सुखधनः
परादैतब्रह्माम्बुधि भृदमृतत्त्वानुभवधीः।
जगद्वन्द्यः स्वामी जयतु परमानन्दमुदितः
शिवानन्दः स्वामी जलधिहृदयो जीवतु चिरम् ।।३।।

वह महात्मा द्वैतभाव का परित्याग कर चुके हैं तथा उन्होंने स्वयं को सत्चित्सुखानन्द राशि में लीन कर लिया है। वे परम अद्वैत ब्रह्म सागर में बह रहे हैं। उनका अमृतत्व की अनुभूति के अतिरिक्त अन्य कोई चिन्तन नहीं है। वे विश्व–वन्दित स्वामी, जो परमानन्द में निमग्न हैं, उनकी जय हो! वे स्वामी शिवानन्द, जिनका हृदय सागर की भाँति विशाल है, दीर्घ आयुष्यमान हों!

परो योगी योगध्वजपरमहंसो विजयते
शिवः शान्तोऽद्वैतः प्रमुदितसमस्तात्मवदनः।
अहोरात्रं लोकोद्धरणहृदयो योऽमृतपथे
शिवानन्दः स्वामी जलधिहृदयो जीवतु चिरम् ।।४।।

योगध्वजा धारण किये हुए, महान् परम योगी, परमहंस, जो मंगलकारी हैं, शान्त हैं, अद्वैत हैं, जो अपने प्रसन्न–वदन से सबको आनन्द प्रदान करते हैं, उनकी जय हो! वे समस्त संसार को अमृतत्व के पथ पर अग्रसर करने के लिए दिन–रात संलग्न हैं। वे स्वामी शिवानन्द, जिनका हृदय सागर की भाँति विशाल है, दीर्घ आयुष्यमान हों!

महाकर्ता जीवत्वमितशरदो नः शुभकरो
महाभोक्ता कल्याणगुणनिलयो जीवतु चिरम् ।
महात्यागी सन्तोषनिधिरिनरुग्जीवतु चिरम्
शिवानन्दः स्वामी जलधिहृदयो जीवतु चिरम् ।।५।।

हम सबका कल्याण करने वाले वे महाकर्ता दीर्घजीवी हों! वे महाभोक्ता, वे मंगलकारी गुणों के आधार शतायु हों! वे महात्यागी, सन्तोष के सागर, सूर्य सदृश देदीप्यमान, दीर्घायु हो! वे स्वामी शिवानन्द, जिनका हृदय सागर की भाँति विशाल है, दीर्घ आयुष्यमान हों!

प्रणम्य पादौ परमार्थदीपौ गुरोः प्रपञ्चोपशमौ महान्तौ।
अथायमात्मा लयमेति शान्ते शिवे चिदानन्दघने समस्ते।।६।।

गुरु के उन श्रीचरणों में प्रणिपात है जो मेरे लिए परम तत्त्व दर्शाने वाले प्रकाश हैं, जो दृश्य–प्रपंच को नष्ट करने वाले हैं, महान् हैं। मैं यह आत्मा, स्वयं को शान्त, शिव, चिदानन्दघन में लीन करता हूँ, वही सब–कुछ है।

(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

ब्रह्मचर्य-साधना के कुछ प्रभावशाली साधन २

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

विचारों पर निगरानी रखें

मन एक महान् विद्युत्-समूह (बैटरी) है। निःसन्देह यह एक बड़ा विद्युज्जनित्र (डायनमो) है। यह विद्युत्-गृह है। स्नायु विद्युत्-वाह को, तन्त्रिका-वेग को विविध इन्द्रियों, ऊतकों तथा अग्रांगोंह्नह्नहाथ, पैर आदिह्नह्नतक पहुँचाने के लिए विद्युत्-रोधी तार हैं।

चैत्य-प्राण में कम्पन होने से मन में विचार-कम्पन होता है। यह विचार-शक्ति स्नायुओं के सहारे आश्चर्यकर तड़ित्-गति से इन्द्रियों तक सम्प्रेषित होती है। भौतिक शरीर एक मांसल ढाँचा है, जिसे मन ने अपने अनुभव तथा उपभोग के लिए संस्कारों तथा वासनाओं के अनुरूप तैयार किया है। मन एक प्रचण्ड तथा विद्रोही इन्द्रियों वाले अप्रशिक्षित कामुक व्यक्ति के अंगों पर नियन्त्रण करता है। वह एक प्रशिक्षित उन्नत योगी का आज्ञाकारी विश्वासपात्र सेवक बन जाता है।

नित्य सतर्क रहने वाले ब्रह्मचारी को अपने विचारों पर सदा बड़ी सावधानीपूर्वक दृष्टि रखनी चाहिए। उसे एक भी कुविचार को मानसिक उद्योगशाला के द्वार में कभी भी प्रवेश नहीं करने देना चाहिए। यदि उसका मन अपने ध्येय अथवा लक्ष्य पर सदा स्थिर है, तो कुविचार के प्रवेश करने की कोई गुंजाइश नहीं है। यदि कूट द्वार से कोई कुविचार मन में प्रवेश कर भी जाये, तो उसे अपने मन को इस विचार का रूप नहीं लेने देना चाहिए। यदि वह इसका शिकार बन गया, तो विचारधारा स्थूल शरीर तक पहुँच जायेगी। इसके पश्चात् इन्द्रियों तथा शरीर के स्नायु-तन्त्र में जलन आरम्भ हो जायेगी। यह गम्भीर स्थिति है।

कुविचार का स्थान उसके विरोधी दिव्य विचार को दे कर उसे कलिकावस्था में ही नष्ट कर देना चाहिए। इसे स्थूल शरीर में प्रवेश करने नहीं देना चाहिए। यदि आपकी संकल्प-शक्ति प्रबल है, तो कुविचार को तत्काल भगाया जा सकता है। प्राणायाम, सशक्त प्रार्थना, विचार, आत्म-चिन्तन सगुण ध्यान तथा सत्संग कुविचारों को मानसिक उद्योगशाला की देहली पर कलिकावस्था में ही नष्ट कर सकते हैं। संघर्ष प्रारम्भ में तीव्र होगा। जब आप अधिकाधिक शुद्ध हो जायेंगे, जब आपकी संकल्प-शक्ति विकसित हो जायेगी, जब आपमें सत्त्व की वृद्धि हो जायेगी तथा जब आपकी मनोदशा स्वाभाविक चिन्तनशील हो जायेगी, तब आप शारीरिक तथा मानसिक ब्रह्मचर्य में प्रतिष्ठित हो जायेंगे। विचार-शक्ति को समझें तथा उसका लाभकारी ढंग से उपयोग करें। मन के तरीके को समझिए। शुद्ध संकल्प-शक्ति का उपयोग करना सीखिए। आप अपने विचारों के एक सतर्क कुशल प्रहरी बनिए। विचारों को मन के बाहर अपना शिर निकालने से पूर्व की चतुराई तथा बुद्धिमानी से नियन्त्रित कीजिए।

मन ही सारे कार्य-व्यापार करता है। आपके मन में एक इच्छा उत्पन्न होती है और तब आप विचार करते हैं। तत्पश्चात् आप कार्य करने के लिए अग्रसर होते हैं। मन के संकल्प को ही कार्य का रूप दिया जाता है। प्रथम संकल्प होता है और तदनन्तर कार्य। अतः कामुक विचारों को मन में प्रवेश करने न दें।

जिसका मन से विचार किया जाता है, वही वाणी बोलती है और जो वाणी बोलती है, वह कर्मेन्द्रियाँ करती हैं। यही कारण है कि वेदों में कहा गया है : ''**तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु**ह्नह्नमेरा मन शुभ संकल्प ही किया करे।'' मन में दिव्य उदात्त विचार रखें। इससे जैसे काष्ठ-फलक में पुरानी कील के ऊपर नयी कील अन्तर्विष्ट करने से पुरानी कील बाहर चली जाती है, वैसे ही अशुभ कामुक विचार शनैः-शनैः विलीन हो जायेंगे।

सत्संगकामी बनें

सत्संग अर्थात् सन्त-महात्माओं, संन्यासियों तथा योगियों की संगति की महिमा वर्णनातीत है। सत्संग की महिमा तथा प्रभाव का वर्णन भागवत, रामायण तथा अन्य धर्मग्रन्थों में अनेक प्रकार से किया गया है। एक क्षण का भी सत्संग सांसारिक लोगों के पुराने पापमय संस्कारों का आमूल-चूल सुधार करने के लिए सर्वथा पर्याप्त है। उन्नत रहस्यवेत्ताओं के चुम्बकीय प्रभा-मण्डल, आध्यात्मिक स्पन्दन तथा शक्तिशाली विचार-तरंगें सांसारिक व्यक्तियों के मन पर भारी प्रभाव डालते हैं। महात्माओं के साथ व्यक्तिगत सम्पर्क सांसारिक लोगों के लिए वस्तुतः एक वरदान है। सन्तों की सेवा से कामुक व्यक्तियों का मन शीघ्र ही शुद्ध हो जाता है। सत्संग मन को उत्तुंग शिखर तक उन्नत करता है। जिस प्रकार माचिस की एक ही सलाई रुई के विशाल गट्ठर को कुछ ही क्षणों में जला कर भस्म कर डालती है, उसी प्रकार सत्संग भी सभी अज्ञान, सभी कामुक विचारों तथा संस्कारों और दुष्कर्मों को अल्प काल में ही भस्म कर डालता है। यही कारण है कि शंकराचार्य आदि ने अपने ग्रन्थों में सत्संग की इतनी अधिक प्रशंसा की है।

यदि आपको अपने यहाँ अच्छा सत्संग उपलब्ध न हो सके तो ऋषिकेश, वाराणसी, नासिक, प्रयाग, हरिद्वार आदि तीर्थस्थानों में चले जाइए। आत्मसाक्षात्कार-प्राप्त व्यक्तियों द्वारा रचित पुस्तकों का स्वाध्याय भी सत्संग के तुल्य ही है। ज्वलन्त वैराग्य तथा मुमुक्षुत्व उत्पन्न करने की प्रभावशाली अचूक औषध एकमात्र सत्संग ही है।

(अनूदित)

विश्व-प्रार्थना

हे स्नेह और करुणा के आराध्य देव!
तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है।
तुम सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ हो।
तुम सच्चिदानन्दघन हो।
तुम सबके अन्तर्वासी हो।

हमें उदारता, समदर्शिता और मन का समत्व प्रदान करो।
श्रद्धा, भक्ति और प्रज्ञा से कृतार्थ करो।
हमें आध्यात्मिक अन्तःशक्ति का वर दो,
जिससे हम वासनाओं का दमन कर मनोजय को प्राप्त हों।
हम अहंकार, काम, लोभ, घृणा, क्रोध और द्वेष से रहित हों।
हमारा हृदय दिव्य गुणों से परिपूरित करो।

हम सब नाम-रूपों में तुम्हारा दर्शन करें।
तुम्हारी अर्चना के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें।
सदा तुम्हारा ही स्मरण करें।
सदा तुम्हारी ही महिमा का गान करें।
तुम्हारा ही कलिकल्मषहारी नाम हमारे अधर-पुट पर हो।
सदा हम तुममें ही निवास करें।

स्वामी शिवानन्द

आपका सर्वोच्च भला

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

प्रत्येक होने वाली घटना को मात्र हो कर, बिना आपके लिए कुछ महत्त्वपूर्ण छोड़े, यों ही नहीं चली जाने दें। प्रत्येक अनुभव व्यक्ति को कुछ-न-कुछ सिखा कर जाने के लिए होता है, वह उसको कुछ-न-कुछ याद दिलाने के लिए ही होता है।

होने वाली घटनाओं को मात्र गुजर जाने वाली होने के कारण से ही सम्भवतया उतना महत्त्वपूर्ण नहीं समझा जाता, जितना अपने समय पर समझा जाता है। जैसे प्रत्येक वर्ष २ अक्तूबर को गान्धी जयन्ती का विशेष महत्त्व होता है। शेष वर्ष-भर उसके सम्बन्ध में कोई सोचता भी नहीं। प्रायः सभी अवसरों के साथ ऐसा ही है।

लोग जन्म लेते हैं और मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। जिनका जन्म हुआ है, उनका मरण निश्चित है। यह एक बड़ा सत्य है। किन्तु हमें पूछना चाहिएह्वह्वकिसका जन्म होता है और कौन मृत्यु को प्राप्त होता है? और अजन्मा क्या है जो कभी मरता नहीं? हमारा चिन्तन दोनों के प्रति होना चाहिए।

जो जन्म लेता है, वह जन्म, मृत्यु, जरा और व्याधि का विषय होता है। मानव उत्पन्न होता है, बढ़ता है, उसमें परिवर्तन आते हैं, वह रोग-ग्रस्त भी होता है, धीरे-धीरे क्षीण हो जाता है और अन्ततः मृत्यु-ग्रस्त हो जाता है। यह सब परिवर्तन शरीर पर घटते हैं। किन्तु यह तथ्य कि हम परिवर्तन की बात करते हैं, यह किसी ऐसे के सन्दर्भ से है जो परिवर्तनहीन है, अन्यथा हम कैसे जानते कि यह परिवर्तन हो रहा है।

यह किसी ऐसी अपरिवर्तनशील वस्तु के सन्दर्भ से ही है कि हम अन्य परिवर्तन होने वाली वस्तुओं की बात कहते हैं कि ये सब वैसी नहीं हैं। जैसेह्वह्वएक मोमबत्ती अँधेरे कक्ष में प्रकाश कर देती है। विद्युत् बल्ब उसे और अधिक प्रकाशित कर देता है। ट्यूबों का सामूहिक प्रकाश उसमें दिन-जैसा प्रकाश कर सकता है। किन्तु यह सब अन्धकारपूर्ण वास्तविक अवस्था के सन्दर्भ में है। प्रकाश की परिवर्तनीय अधिक-से-अधिक प्रकाशपूर्ण स्थितियाँ उसकी उस प्रथम वास्तविक अन्धकारपूर्ण स्थिति के सन्दर्भ को ले कर है जो सदा से थी।

अतः समस्त वस्तुओं के परिवर्तनशील होने की बात उस सदा व्याप्त अपरिवर्तनीय मूल-सत्ता के सन्दर्भ पर ही आधारित है। वह अपरिवर्तनीय मूल-सत्ता क्या है? उसे जानना चाहिए। इन परिवर्तनशील वस्तु-पदार्थों का यही उपयोग है कि ये कम-से-कम हमारे ध्यान को उस मूल-आधार तक ले जाते हैं जिसके परिवेश में यह सब परिवर्तन घट रहा है। कोई भी कलाकार शून्य लकड़ी के चौखटे पर चित्रकारी नहीं कर सकता, भले ही वह कितना भी सुन्दर क्यों न हो। कोई भी कलाकार ऐसा नहीं कर सकता। उस चौखटे पर कैन्वस का लगा होना आवश्यक है। रंगों और आकृतियों के लिए कोई आधार चाहिए।

ये सब परिवर्तनशील वस्तु-पदार्थ, जो संसार में व्याप्त हैं, जिनसे मिल कर ही यह संसार बना हुआ है, इनका आधार क्या है? उपनिषदों की भाषा मेंह्वह्ववही जानने योग्य है, उसी का चिन्तन किया जाना चाहिए। उसी का ध्यान करना चाहिए, उसी का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। और वह सत्ता, वह अपरिवर्तनीय शाश्वत सत्ता, वह क्या है? कौन है वह जो इस समस्त परिवर्तन को जानता है? कौन है वह जो बता सकता है कि परिवर्तन हो रहा है?

जब तक कोई साक्षी सत्ता न हो और जब तक वह साक्षी सत्ता चेतन साक्षी सत्ता न हो, तब तक वह इसकी पुष्टि नहीं कर सकती कि सभी वस्तुएँ अस्थायी हैं, क्षणिक,

अनित्य और परिवर्तनशील हैं। निश्चित रूप से यह एक जागरूक, अभिज्ञ सत्ता है जो यह सब देखती है, इसमें परस्पर समता-विषमता देखती है और निर्णय देती है कि समय के अनुसार सब-कुछ समाप्त होता जाता हैह्वह्वकुछ भी स्थायी नहीं है, कुछ भी सदा रहने वाला नहीं है। अतः कोई ऐसी सत्ता है, जो इसकी पुष्टि करती है, जो यह समझती है कि सब-कुछ बदल रहा है, वह एक चेतन सत्ता है, एक ऐसी सत्ता है जो स्वयं को अभिव्यक्त कर सकती है। वह क्या है? वही आप हैं!

तब फिर आप यह 'मैं, मैं, मैं' क्या कहते हैं? आप जिसे 'मैं, मैं' कहते हैं, वह कुछ ऐसी वस्तु है, जो इस जगत् की परिवर्तनशील नाशवान् वस्तुओं से सम्बन्धित है। किन्तु वह निरन्तर अपरिवर्ती सत्ता जिसने दस वर्ष पूर्व भी कहा था कि सब-कुछ परिवर्तनीय है, जिसने पाँच वर्ष पूर्व भी कहा कि सब-कुछ बदल रहा है, जो अब भी यही कह रही है कि सब-कुछ परिवर्तनीय है, वह अवश्यमेव ही निरन्तर एक ही सत्ता है जो इस समस्त परिवर्तन की पुष्टि करती है। पचास वर्ष पूर्व उसने यही कहा था कि सब बदल रहा है, विगत कल से एक दिन पूर्व यही कहा था, विगत कल यही कहा, आज कहा कि परिवर्तन हो रहा है और आगामी कल तथा आगामी परसों भी यही पुष्टि करेगी कि सभी कुछ परिवर्तित होता जा रहा है।

केवल एक वही है जो अपरिवर्तनीय है और जो सबका अधिष्ठान, आधार है। वह कौन है? वही आपकी वास्तविक पहचान है, आपका वास्तविक स्वरूप है। आप ही इस समस्त परिवर्तनीय के पीछे एकमात्र परिवर्तन रहित द्रष्टा हैं। आप ही इन सब परिवर्तनों के ज्ञाता और साक्षी हैं। आप स्वयं अदृश्य हैं; किन्तु इन सब बदल रही वस्तुओं की पुष्टि करने वाले आप ही हैं। और केवल आप ही इस प्रश्न का उत्तर दे सकते हैं कि आप कौन हैं? मैं कौन हूँ?

आपमें क्षमता है कि आप भीतर प्रवेश कर सकें, मनन करें और ध्यान करें! अतः इस सम्पूर्ण ढाँचे में आप ही केन्द्रीय तत्त्व हैं जो अपरिवर्तनीय, चेतन, अभिज्ञ वास्तविकता है। स्वयं को अपने इसी स्वरूप में जानें, तब आप मुक्त हो जायेंगे। यही श्वेतकेतु के पिता ने उसे कहा थाह्वह्व

''हे श्वेतकेतु, अपने को वही शाश्वत, अमर, अनश्वर सत्ता जानो। तब तुम मुक्ति को प्राप्त कर लोगे।''

परम पावन गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के आशीर्वाद और भगवान् की कृपा आपकोह्वह्वआपमें से हर एक को यह क्षमता प्रदान करे कि आप स्वयं को अपने वास्तविक रूप मेंह्वह्वअपने अपरिवर्तनीय, अमर, अनश्वर स्वरूप में पहचानें। इसी में आपका सर्वोच्च भला निहित है। भगवान् के आशीर्वाद आप सब पर हों!

(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

भगवत्स्मरण

सदैव भगवान् का स्मरण रखें। जहाँ-कहीं भी आप जायें, 'उनकी' उपस्थिति का अनुभव करें; क्योंकि 'वह' प्रत्येक स्थान पर हैं। कोई ऐसा स्थान नहीं है, जहाँ 'वह' न हों। वह आपकी श्वासों से भी अधिक निकट हैं। प्रत्येक रूप में 'उनका' दर्शन करें। 'उनके' श्रीचरणों की शरण में जायें। 'वह' आपकी रक्षा तथा मार्ग-निर्देशन करेंगे।

भगवान् का सतत स्मरण करने से आपको अनन्त प्रसन्नता तथा परम शान्ति की प्राप्ति होगी। आपकी प्रत्येक गति 'उनसे' की गयी एक जीवन्त प्रार्थना बन जाये। आप जिन-जिन विचारों को निष्ठा तथा दृढ़ता से अपनाते हैं, उन्हीं के सदृश आप अपना विकास करते हैं। उन आदर्शों का चिन्तन करें, जिनके अनुरूप आप विकसित होना चाहते हैं। यह आपके दैनिक आध्यात्मिक जीवन का एक अंग है।

स्वामी चिदानन्द

स्मृतिग्रन्थ अथवा धर्म-संहिता :

कर्मकाण्ड का अर्थ ३

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

पूजा

पूजा एक महत्त्वपूर्ण धार्मिक कृत्य (कर्मकाण्ड) है। उपासना और चिन्तन करने के उद्देश्यों से किसी प्रतीक, यन्त्र या मूर्ति में ईश्वर का आह्वान करने को पूजा कहते हैं। पूजा के कर्मकाण्ड में ईश्वर भक्त के लिए एक सम्माननीय अतिथि या राजा का ही रूप होता है। उसका भव्य सत्कार किया जाता है तथा वह श्रद्धा का पात्र होता है। इस कर्मकाण्ड में ईश्वर की उपासना बाह्य और आभ्यन्तरद्वद्वदोनों प्रकार की हो सकती है। बाह्य पूजा मन्दिरों तथा घरों के पवित्र स्थलों में सम्पन्न की जाती हुई देखी जा सकती है।

आह्वान की प्रक्रिया मूर्ति, प्रतीक या पूजा-स्थल में कृपापूर्वक प्रकट होने के लिए ईश्वर को दिया गया निमन्त्रण है। दिव्य अतिथि का आह्वान तथा स्वागत-सत्कार मुख्यतया इस क्रम से किया जाता है :

(१) ध्यानद्वद्वइष्टदेव के स्वरूप का मानसिक ध्यान।

(२) आवाहनद्वद्वमूर्ति या प्रतीक में भगवान् की भव्य उपस्थिति की कल्पना करना।

(३) आसनद्वद्वइष्टदेव को उत्थित आसन प्रदान करके उस पर बिठलाना।

(४) पाद्यद्वद्वइष्टदेव का चरण-प्रक्षालन करना (जैसा कि भारत में अतिथि का स्वागत करते समय किया जाता है)।

(५) अर्घ्यद्वद्वजल, दूध, दही, कुशाग्र आदि आदरपूर्वक अर्पित करके विशेष रूप से सत्कार करना।

(६) स्नानद्वद्वस्नान कराना।

(७) वस्त्रद्वद्वपरिधान अर्पित करना।

(८) यज्ञोपवीतद्वद्वजनेऊ धारण कराना।

(९) गन्धद्वद्वसुगन्धि, चन्दन अर्पित करना।

(१०) पुष्पद्वद्वफूल चढ़ाना।

(११) धूपद्वद्वधूप, अगरबत्ती आदि जलाना।

(१२) दीपद्वद्वआरती उतारना।

(१३) नैवेद्यद्वद्वभोजन अर्पित करना।

(१४) ताम्बूलद्वद्वखाने के लिए पान अर्पित करना।

(१५) नीराजनद्वद्वइष्टदेवता के सामने कपूर जलाना।

(१६) सुवर्णपुष्पद्वद्वकोई उपहार, विशेष रूप से स्वर्णाभूषण अर्पित करना।

इस क्रम से पूजा करने के ये सोलह प्रकार **(षोडशोपचार)** हैं। अन्त में इष्टदेव से प्रार्थना की जाती है कि वे प्रतीक या मूर्ति से विदा हो जायें **(विसर्जन)**।

प्रत्येक क्रम के अनुसार पूजा करते समय सम्बन्धित मन्त्रों का पाठ किया जाता है। इन मन्त्रों से पता चलता है कि पूजा का कौन-सा क्रम चल रहा है। बड़े-बड़े मन्दिरों में इष्टदेवता मूर्ति में स्थायी रूप से निवास करते हैं और मन्दिर दिव्य प्रकटीकरण के लिए स्थायी देव-स्थान बन जाते हैं। भक्तों के लिए वे तीर्थ-स्थानों का रूप ले लेते हैं। इन मन्दिरों में इष्टदेव की पूजा करते समय नृत्य और संगीत (कण्ठ-संगीत तथा वाद्य-संगीतद्वद्वदोनों ही) से उनका मनोरंजन भी किया जाता है। उषाकाल में इष्टदेव को आनुष्ठानिक विधि से जगाया जाता है तथा दिन के सारे अनुष्ठान पूरे करने के बाद रात्रि को सुलाया भी जाता है।

विशेष उत्सवों में मन्दिर-विग्रह में राजाधिराज के रूप में विराजमान इष्टदेव को विशाल शोभा-यात्रा निकाल कर

घुमाया जाता है। पूजा के समय उपासक विभिन्न प्रकार की मुद्राएँ प्रदर्शित करता है।

ये मुद्राएँ उसकी भावनाओं तथा पूजा के उद्देश्यों की सूचक हैं। जिस प्रकार नृत्य करते समय विभिन्न प्रकार के अर्थगर्भित संकेत (अभिनय) किये जाते हैं, उसी प्रकार पूजा के समय मुद्राओं के माध्यम से पूजा के आन्तरिक महत्त्व और उद्देश्यों की ओर संकेत किया जाता है। इष्टदेव के रूप के अनुकूल अपने को बनाने हेतु उपासक न्यास करता है।

न्यास के द्वारा वह साकार ईश्वर के विभिन्न अंगों को अपने शरीर के तत्तद्स्थानीय अंगों में स्थापित करता है। यह पिण्डाण्ड के साथ ब्रह्माण्ड को समायोजित करने का प्रतीक है। यह दिव्य सत्ता का साक्षात्कार करने के परिणाम-स्वरूप सर्वव्यापक बन जाने के क्रमबद्ध प्रयत्न की एक प्रक्रिया है।

आभ्यन्तर पूजा मानसिक स्तर का कर्मकाण्ड है और यह उपर्युक्त विधियों से बाह्य उपासना की तरह ही की जाती है। मानस पूजा में इष्टदेव को अर्पित करने के लिए भौतिक पदार्थों की आवश्यकता तो नहीं पड़ती, परन्तु बाह्य पूजा की समस्त मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएँ इसमें अन्तर्विष्ट हैं। पुसलर नयनार एक शैव सन्त थे। वे मानसिक स्तर पर ही मानसिक ईंटों तथा गारे से इष्टदेव का मन्दिर बनाया करते थे। मानसिक रूप से ही मन्दिर में इष्टदेव की मूर्ति स्थापित करते थे। उन्हें इसका वही फल प्राप्त होता था जो उन्हें बाह्य पूजा से प्राप्त होता। महाभारत में अगस्त्य मुनि द्वारा भौतिक पदार्थों की सहायता के बिना मानसिक स्तर पर यज्ञ सम्पन्न करने का वर्णन मिलता है। इस मानसिक यज्ञ के फल-स्वरूप जो चमत्कार हुआ, उसे देख कर देवता भी चकित रह गये। मानस पूजा के उच्चतर रूपों में बाह्य पूजा के उपर्युक्त क्रम (षोडशोपचार) को अपनाने की अनिवार्यता नहीं है। न ही यह आवश्यक है कि बाह्य पूजा की विधि के अनुसार पूजन-सामग्री एकत्र करके व्यवस्थित की जाये। मानस पूजा बाह्य पूजा की अपेक्षा सरल है; परन्तु ध्यान के द्वारा आन्तरिक आत्म-समर्पण की भावभूमि पर विचारों को एक बिन्दु पर एकाग्र करने की अपेक्षा अधिक संकेन्द्रित क्रिया है। आभ्यन्तर पूजा की यह चरम परिणति है।

भगवन्नाम या मन्त्र का जप अधिकांशतः एक मानसिक कर्मकाण्ड है, यद्यपि साधना की प्रारम्भिक स्थितियों में यह सम्बन्धित चिन्तन से सम्बद्ध एक मौखिक प्रक्रिया के रूप में होता है। मन्त्र इष्टदेवता का एक सघन ध्वनि-प्रतीक है। मन्त्र का एक देवता तथा एक ऋषि होता है। वह किसी विशेष छन्द में बद्ध होता है। मन्त्र-जप प्रारम्भ करने से पहले देवता, ऋषि तथा छन्द का मन-ही-मन स्मरण या मौखिक रूप से उच्चारण करना चाहिए। ऐसा करने से इष्टदेवता की शक्ति, मन्त्र की शब्द-शक्ति तथा मन्त्र-द्रष्टा ऋषि का सूक्ष्म रूप से आवाहन हो जाता है। इस त्रिगुण-शक्ति का मानसिक रूप से आवाहन कर लेने से साधना में सफलता प्राप्त करने में सहायता मिलती है, यद्यपि इस (सफलता) के लिए स्वयं साधक का आन्तरिक प्रयत्न तो आवश्यक है ही।

मन्त्र के अक्षरों का संयोजन इस प्रकार किया जाता है कि उससे एक विशेष प्रकार का प्रभाव उत्पन्न हो जाता है। मन्त्र का शुद्ध उच्चारण करने से एक रूप निर्मित होता है, जिसका बाह्य प्रक्षेपण अन्तरिक्ष में तथा आन्तरिक प्रक्षेपण मन में होता है। यह रूप मन्त्र के इष्टदेव की ही रूपरेखा होती है। मन्त्र में एक या कई वर्ण हो सकते हैं। एक अक्षर के मन्त्र को बीज-मन्त्र कहते हैं। मन्त्र जितना ही छोटा होता है, उतना ही उसका प्रभाव अधिक होता है। इसका कारण सम्भवतः यह है कि छोटे मन्त्र में शक्ति बहुत अधिक संकेन्द्रित रहती है तथा इसमें सम्बन्धित विचारों को मन्त्र की ओर निर्देशित करने की सुविधा रहती है।

सर्वश्रेष्ठ मन्त्र प्रणव है जिसमें (अ, उ तथा म्‌ इन तीन ध्वनियों से बना हुआ) एक ही स्वर ॐ रहता है। नाद के क्षेत्र में यह स्वर परम तत्त्व का प्रतीक है। प्रणव मन्त्र का जप करने से विचारों तथा स्नायु-तन्त्र से प्रवाहित होने वाली ऊर्जाओं में सामंजस्य उत्पन्न होता है। व्यक्तित्व में सन्तुलन की यह स्थिति मन को विकर्षण या ध्यान-भंग (रजस्) की स्थिति से मुक्त करके सत्त्व (सुस्पष्ट संस्वरिता) में स्थिर कर

देती है। सचेतन सन्तुलन की इसी स्थिति में सर्वव्यापी परम सत्ता का प्रकाश प्रकट होता हैह्वह्वमानो झील के स्वच्छ स्थिर जल में चमकते हुए सूर्य का स्पष्ट प्रतिबिम्ब पड़ रहा हो।

प्रार्थना

प्रार्थना और जप में थोड़ा अन्तर है। जप में मन्त्र के निश्चित शब्दों का ही उच्चारण किया जाता है। प्रार्थना किसी भी भाषा में, किसी भी प्रकार की गयी अपने भावों की अभिव्यक्ति होती है। प्रार्थना मुख्यतया ईश्वर की कृपा प्राप्त करने के लिए उससे की गयी याचना है। साधारण प्रार्थना परोक्ष उद्देश्यों की पूर्ति के लिएह्वह्वयथा, स्वास्थ्य-लाभ या किसी भौतिक वस्तु की प्राप्ति हेतु की जा सकती है। परन्तु वास्तविक आध्यात्मिक प्रार्थना में ईश्वर से किसी सांसारिक पदार्थ की याचना नहीं की जाती। हाँ, ईश्वर से उसी को प्राप्त करने हेतु याचना की जाती है। यद्यपि प्रार्थना शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों द्वारा अभिव्यक्त की जा सकती है; परन्तु सदैव ऐसा हो, यह आवश्यक नहीं है। प्रार्थना मानसिक भी हो सकती है। ईश्वर के प्रति प्रेम तथा श्रद्धा की भावनाओं में डूबा हुआ भक्त गहन मानसिक एकाग्रता की सहायता से भगवत्कृपा की याचना मन-ही-मन (आन्तरिक रूप से) भी कर सकता है। धर्मग्रन्थों में देवकुल के अनेक देवताओं को सम्बोधित विभिन्न प्रार्थनाएँ मिलती हैं। अधिकतर प्रार्थनाएँ सीधे परम तत्त्व को ही सम्बोधित की गयी हैं।

सामान्यतया इष्टदेवता का उन्नयन करके उसे परम सत्ता के समकक्ष या सर्वोच्च दिव्य सत्ता मानते हुए मान-सम्मान अर्पित किया जाता है। इस प्रकार भक्त के मन में इष्टदेवता के अतिरिक्त अन्य किसी व्यक्ति, वस्तु या परिस्थिति के लिए स्थान नहीं रह जाता। यह इस सत्य का संकेतक है कि अन्ततः एक ही ईश्वर की सत्ता है, जिसके विभिन्न रूप ही उपास्य इष्टदेवता हैं। भावनाओं की गहनता में जब आध्यात्मिक अनुकूलता की स्थिति प्राप्त हो जाती है (यही प्रार्थना में निहित उसकी उत्प्रेरक शक्ति है), तब प्रार्थना भगवत्कृपा को उपासक के हृदय की ओर आकृष्ट कर लेती है।

अन्तरतम से उद्भूत भावनाएँ यथार्थता के बहुत निकट होती हैं, अतः वे शीघ्र ही फलवती होती हैं। पूजा और यज्ञ के सर्वोत्तम रूप जप और प्रार्थना हैं, क्योंकि इनमें बाह्य पदार्थों या परिस्थितियों पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। प्रार्थना के द्वारा आत्म-समर्पण करके या मन्त्र-जप के द्वारा अपने व्यक्तित्व को अनुकूल बना कर अपने को इष्टदेवता के आश्रित बना लेना ही प्रार्थना का उद्देश्य है।

बड़ी प्रार्थना-सभाओं को सत्संग कहा जाता है। इनमें प्रार्थना के अलावा पूजा तथा प्रवचन के कार्यक्रम भी जोड़े जा सकते हैं।

(अनूदित)

भगवन्नाम-जप तथा भगवत्स्मरण

भगवन्नाम-जप आपकी वास्तविक सम्पत्ति है। प्रत्येक अन्य वस्तु क्षणभंगुर है। बँगले, बैंक में जमा किया हुआ धन, कारें, बाग-बगीचे आदि आपकी वास्तविक सम्पत्ति नहीं हैं। इनसे आपको मानसिक शान्ति नहीं प्राप्त हो सकती। केवल भगवान् से ही आपको शान्ति तथा परमानन्द प्राप्त हो सकते हैं। सदैव स्मरण रखेंह्वह्व**''यो वै भूमा तत्सुखम्।''**

भगवान् में पूर्ण आस्था रखें। 'उनका' नाम आपका एकमात्र आश्रय, गति तथा अवलम्ब है। आपका पवित्र हृदय ही 'उनका' मन्दिर है। अपने हृदय को पवित्र रखें तथा श्रेष्ठ कर्म करें।

जप, कीर्तन तथा प्रार्थना करें। दूसरों की भावनाओं को ठेस न पहुँचायें। आपके विचार उदात्त तथा दिव्य होने चाहिए। प्रत्येक दिवस का प्रारम्भ तथा अन्त भगवत्स्मरण से करें। दिन-भर के कार्यकलापों को भगवत्स्मरण के रंग में रँग डालें। अपने दिवस भगवान् के साथ मानसिक रूप से रहते हुए व्यतीत करें।

स्वामी चिदानन्द

उस परम सत्ता का जीवन्त प्रकटीकरण*

श्री विंफ्रिड एगर्ट, न्यूरमबर्ग, जर्मनी

युद्ध-बन्दी के रूप में अमरीकी शिविर में व्यतीत किये गये समय के दौरान युगान्त-विषयक प्रश्नों पर तथा मनुष्य-जीवन के परम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए व्यावहारिक साधनों सम्बन्धी प्रश्नों पर दीर्घकालीन चिन्तन ने मुझे अपने पूर्वजों से प्राप्त ईसाई-धर्म के विचारों से दूर करके हिन्दू-धर्म के ब्रह्मविद्यावादी दर्शन की ओर आकर्षित कर दिया था। विनाशकारी सिद्धान्तों के लिए छह वर्षों की नृशंस हत्याओं और घृणा के प्रबल दुष्प्रभाव ने मेरे मन में तीव्र इच्छा उत्पन्न कर दी कि मैं जीवन के परिपूर्ण आदर्शों को जानूँ; न केवल जान लूँ, बल्कि उन्हें अपने जीवन में जी सकूँ।

लगभग तीन वर्ष पहले मुझे पूज्य श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के सम्बन्ध में, उनके ही एक गहन शिष्य श्री बोरिस सैकारो, जो कि मेरे अनुरोध करने से मुझे योग-प्रशिक्षण देते थे, से जाना।

उसी समय से स्वामी शिवानन्द जी मेरे जीवन के हर क्षेत्र में सदैव ही एक उज्ज्वल सितारा बन कर निर्देशन देते रहे हैं। उन्होंने मेरे समस्त संशय दूर कर दिये हैं, उन्होंने जीवन-लक्ष्य और जीवन-मूल्यों की मेरी धारणा में समंजन कर दिया है तथा उन्होंने मेरे जीवन-पथ पर एक क्रान्तिकारी प्रभाव डाला है।

इस सबके लिए मेरा उनके प्रति असीम आभार अभिव्यक्त करना गुरु-चरणों में समर्पित एक बहुत ही छोटी-सी भेंट है।

स्वामी शिवानन्द जी का निर्मल, उज्ज्वल जीवन, समस्त सृष्टि के प्रति उनकी उदात्त समदृष्टि, इतनी विस्तृत दृष्टि कि किसी भी सामाजिक परिस्थिति या मानवीय समस्याओं की उपेक्षा नहीं हो, यूरोपीय लोगों में ऐसा पा सकना अत्यन्त कठिन है। ऐसे गुरु, जो हिन्दू-धर्म के हमारे समय के सर्वश्रेष्ठ व्याख्याकार हैं, जो भगवद्गीता में वर्णित हिन्दू-आदर्शों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो परम सत्ता के जीवन्त प्रकटीकरण हैं, उनके व्यक्तिगत सम्पर्क में, अथवा उनकी कृतियों द्वारा उनके सम्पर्क में आने का बहुमूल्य सुयोग जिसे भी प्राप्त होता है, उसको उनका उद्भासित व्यक्तित्व मन्त्रमुग्ध कर लेता है। इन सद्गुरु का और महात्मा गान्धी का मैंने अपने जीवन के आदर्श के रूप में चयन किया है। ये मानवता को पाशविकता एवं भौतिकवाद से मुक्त करने तथा सदाचारिता, आध्यात्मिकता, शान्ति एवं परम आनन्द के पथ पर अग्रसर करने के लिए भेजे गये हैं।

स्वामी जी की 'प्रैक्टिकल लैसन्स इन योगा' (योग का व्यावहारिक प्रशिक्षण) पुस्तक ने मुझे योग विज्ञान का एक समूचा स्पष्ट चित्र दे दिया है। विषय को लेने की उनकी वैज्ञानिक विधि जहाँ सामान्य व्यक्ति को अत्यन्त दुरूह समस्याओं को भली-भाँति समझ सकने योग्य बनाते हुए उसे पढ़ने में आनन्द देती है, वहीं उनकी सुन्दर भव्य सूत्रात्मक शैली बुद्धिवादियों को भी पूर्णतया सन्तुष्टि प्रदान करती है।

यहाँ यूरोप में तो उनकी पुस्तकें और भी अधिक मूल्यवान् हैं; क्योंकि यहाँ वास्तविक एवं प्रामाणिक साहित्य तो लगभग कहीं से भी प्राप्त नहीं किया जा सकता। और इसके अतिरिक्त यहाँ प्राप्त होने वाली पुस्तकों में अधिकांश प्रतिशत तो दुरूह विषयों को अत्यन्त अपर्याप्त ढंग सेह्वह्वबल्कि ठीक-ठीक कहें, तो अत्यधिक तोड़-मरोड़ कर विकृत रूप से और ऊपरी तौर से प्रस्तुत करते हैं और इस प्रकार पाठक को विषय पर प्रकाश डालने की जगह भटकन में डाल देते हैं। विशेष रूप से पश्चिमी जगत् में प्रामाणिक, ज्ञानप्रद एवं प्रशिक्षणप्रद साहित्य और प्रामाणिक अनुवाद की अत्यधिक आवश्यकता है। सभी सत्य के जिज्ञासुओं से और विशेष रूप से जर्मनी के मेरे भाई-बहनह्वह्वजो वर्तमान भौतिकतापूर्ण और

*१९५६ में प्रकाशित 'शिवानन्द-योगी' में से

निराशाजनक वातावरण में सच्चे प्रकाश की खोज में संघर्षरत हैंह्वह्वसे अनुरोध है कि वे वास्तविक दिव्य निर्देशन की प्राप्ति के लिए इन प्रशिक्षित गुरु के पास जायें। धर्म की संकुचितता एवं हठधर्मिता से बहुत से विद्यार्थी अत्यन्त निराश हो चुके हैं। वे सभी स्वामी जी द्वारा की गयी प्राचीन दिव्य हिन्दू-शिक्षाओं की वास्तविक व्याख्याओं से अमित सम्पदा एवं ज्ञान-प्रकाश प्राप्त कर सकते हैं। ईश्वरीय अनुभूतियों की केवल परिपूर्ण व्यावहारिक क्रियान्विती ही हमें दयनीय अनिश्चितताओं से परम तत्त्व की ओर उन्मुख कर सकती है; पाशविकता से मैत्रीपूर्ण सामंजस्यता की ओर, युद्ध से शान्ति की ओर तथा प्रेम पर आधारित सामाजिक समरसता की ओर उन्मुख कर सकती है; यही स्वामी जी की शिक्षाओं का सार है। पश्चिमी जगत् के लिए महत्त्वपूर्ण यह है कि वैश्व-सिद्धान्तों को मात्र बौद्धिक स्तर पर धारणाओं के रूप में स्थान देने की जगह इन 'सिद्धान्तों को जीवन में उतारने' के व्यावहारिक पक्ष की ओर बढ़ना, दूसरे शब्दों मेंह्वह्वदेखने से करने की ओर प्रवृत्त होना।

हमारे चिकित्सकों के लिए स्वामी शिवानन्द जी एक आदर्श हैं, विशेष रूप से जहाँ तक मानव की भौतिक और आध्यात्मिक इकाई की धारणा का सम्बन्ध है। चिकित्सीय ज्ञान, जो कि पूर्णतया वैज्ञानिक ढंग से चलता है, से काम नहीं चलेगा। चिकित्सक को, एक चिकित्सक होने के साथ-साथ सान्त्वना-प्रदाता होना, निर्धनों एवं रोगियों का मित्र होना भी अति आवश्यक है, क्योंकि उनकी पहुँच दिव्य होनी चाहिए। यह दिव्य-पहुँच हर व्यक्ति की, हर क्षेत्र में ही होनी चाहिए। हम स्वामी शिवानन्द जी के शिष्यत्व में आ कर यह दिव्य-पहुँच प्राप्त कर सकते हैं। उनके स्वास्थ्य सम्बन्धी विलक्षण निर्देशन हमें अविश्वसनीय शक्ति एवं परिपूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करते हैं, यह मेरा निजी अनुभव है। यदि राष्ट्रीय स्तर पर योगासनों का अभ्यास कराया जाये तो यह निस्सन्देह लोगों के स्वास्थ्य में सुधार लायेगा।

अन्ततोगत्वा स्वामी जी पुस्तकें एवं पत्रिकाएँ निःशुल्क भेजने के द्वारा हमें उस समय आर्थिक सहायता देने में उदारतापूर्वक प्रयत्नशील रहते हैं जब कि उसकी पूर्ति कर सकना भी सम्भव नहीं होता। यह मुझे उस समय ज्ञात हुआ जब मेरे प्रार्थना किये बिना ही मुझे पुस्तकों के दो बड़े पैकेट प्राप्त हुए जिनसे कि मेरी प्रामाणिक स्रोतों की क्षुधा अन्ततः तृप्त हो गयी।

स्वामी जी के ६५ वें जन्म-दिवस पर मैं उनके जर्मनी के शिष्यों के साथ-साथ नतमस्तक होता हुआ अपने गुरुदेव को हार्दिक शुभ-कामनाएँ प्रेषित करता हूँ। हमारे लिए उन्होंने जो-कुछ किया है, उसके लिए आभार सहित प्रार्थना है कि परमात्मा उन्हें आने वाले अनेकों वर्ष प्रदान करे, जिससे कि दिव्य प्रेम और सेवाह्वह्वजो कि अन्य हर वस्तु से अधिक शक्तिशाली हैह्वह्वइस धरा से कभी समाप्त न हो!

(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

संसार के बन्धन को किस प्रकार तोड़ें

संसार-चक्र अथवा भव-चक्र अथवा जन्म-मृत्यु-चक्र में बाँधने वाली जंजीरें आपकी इच्छाएँ ही हैं। जब तक आप इस संसार के पदार्थों की इच्छा करते रहेंगे, तब तक आपको उन्हें प्राप्त करके भोगने के लिए इस संसार में आना ही पड़ेगा। किन्तु जब इन भौतिक पदार्थों के लिए आपकी कामना समाप्त हो जायेगी, तब बन्धन टूट जायेंगे और आप स्वतन्त्र हो जायेंगे। फिर आपको अन्य जन्म लेने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। आपको मोक्ष की प्राप्ति हो जायेगी।

आप इस संसार में भटकते हैं; क्योंकि आप अपने को परमात्मा से भिन्न समझते हैं। ध्यान और योग के द्वारा यदि आप अपने-आपको 'उसके' साथ एक कर दें, तो आप अमरता और शाश्वत परमानन्द प्राप्त करेंगे। शाश्वत तत्त्व के ज्ञान द्वारा कर्म के बन्धन को काट कर अपनी अन्तरात्माह्वह्वजो अन्तर्यामी हैह्वह्वकी परम शान्ति का अनुभव करें। आप जन्म और मृत्यु के चक्र से छूट जायेंगे। पापों और दुर्वासनाओं से मुक्त हो कर आप जीवन्मुक्त बन जायेंगे। आप सभी जीवों में परमात्मा

शिवानन्द-विजय २

श्री सुन्दरश्याम 'मुकुट'

अंक १

दृश्य १ (सारांश)

दक्षिण भारत का एक सुप्रसिद्ध वैष्णव मन्दिर। अप्पय्य दीक्षितार के मन्दिर में प्रवेश करने से वहाँ पूजा कर रहे धर्मान्ध वैष्णवों की भावनाओं को अत्यन्त आघात पहुँचता है। वे सन्त को बाहर निकालने में स्वयं असफल हो कर प्रमुख पुजारी को बुलाते हैं तथा उसका आदेश पा कर सन्त-प्रकृति के दीक्षितार को बलपूर्वक मन्दिर-परिसर से बाहर निकालने का प्रयत्न करते हैं।

मन्दिर-गर्भगृह का परदा चमत्कारिक ढंग से बीच में से खुल जाता है तथा विष्णु भगवान् की पावन प्रतिमा बदल कर त्रिशूल-डमरु-धारी भगवान् शिव के रूप में दिखायी देती है। सभी वैष्णव घबराहट और निराशा में भाग खड़े होते हैं। अप्पय्य दीक्षितार उन भगवान् की स्तुति करते हैं जो अचानक उनकी दृष्टि के समक्ष दिव्य स्वरूप में, सन्त की प्रार्थनाओं का उत्तर देने के लिए अपने भव्य स्वरूप में प्रत्यक्ष प्रकट हो जाते हैं तथा भविष्यवाणी करते हुए उनके ही वंश में स्वामी शिवानन्द जी के रक्षक रूप में अवतरित हो कर मानवता को परिपूर्णता एवं परमानन्द का पथ दर्शा कर उन्नत करने के विषय में कहते हैं। (इसके कई शताब्दियों के उपरान्त लगभग १८९८ में)

चरित्रों का परिचय

अप्पय्य दीक्षितार : संस्कृत के अद्वितीय विद्वान् एवं भगवान् शिव के सुप्रसिद्ध भक्त

नारद : देव ऋषि

वेंगु अय्यर : अप्पय्य दीक्षितार के एक सुयोग्य वंशज

डा. कुप्पुस्वामि : (श्री स्वामी शिवानन्द जी) इस नाटक के नायकह्वह्ववेंगु अय्यर के सुपुत्र, आरम्भ में चिकित्सक तथा बाद में मानवता को जाग्रत करने के लिए समर्पित एक महान् सन्त

अंक १

।। दूसरा दृश्य।।

स्थानह्वह्वपट्टमडाई ग्राम

समयह्वह्वमध्याह्व

(नारद जी का साधु-वेश में वीणा पर गाते हुए प्रवेश)

(गान)

नारायण भज प्यारे मनुवा नारायण भज प्यारे।
उलझ रहा क्यों जग काँटों में
चाकी के से दो पाटों में,
पिसता रहता है क्यों निशिदिन, सुख मिलता है क्या रे।
नारायण भज प्यारे।

भूल रहा तू अपने पन को,
याद नहीं करता उस क्षण को,
काल केश खींचेगा वैभव छोड़ चलेगा सारे।
नारायण भज प्यारे।

प्रेम जोड़ अपने भगवन् से,
मोह छोड़ तन मन औ' धन से,
पार करे वह भव-सागर से जिसने पापी तारे।
नारायण भज प्यारे।

अहा हा! यही तो पट्टमडाई ग्राम है। जहाँ संसार का

कल्याण करने के लिए भगवान् शिव ने महापुरुष को जन्म दिया है। धन्य हो इस ग्राम को। इसके भाग्य को देख कर किसको ईर्ष्या नहीं हो सकती! यह कितना रमणीय स्थान है! यहाँ का सौन्दर्य देख कर हृदय गद्गद हो जाता है। प्रकृति के ये दृश्य किसको आकर्षित नहीं करते। यहाँ के निवासी भावुक और सहृदय दिखायी देते हैं। जिधर जाता हूँ, उधर ही राम-नाम सुनायी देता है। शास्त्रों की कथाएँ कर्णगोचर होती हैं। आतिथ्य-सत्कार तो यहाँ कूट-कूट कर भरा हुआ है। मुझे तो यह सचमुच इन्द्रपुरी-सी दिखलायी देती है। ऐसे सुरम्य और सभ्य ग्राम में अवतार होना कोई आश्चर्य की बात नहीं। चलूँ, एक बार उस महापुरुष के दर्शन तो कर लूँ।

(आगे देख कर)

अरे! ये सामने से कौन चले आ रहे हैं! देखने से तो मालूम होता है कि कोई प्रतिष्ठित घराने के सभ्य ग्रामीण हैं। मस्तक पर तिलक, गले में रुद्राक्ष, वदन पर शिवनामी चादर से तो कोई शिव-भक्त जान पड़ते हैं। मैं ही इनसे पूछूँ, ये कौन महाशय हैं।

(वेंगु अय्यर का अपने पुत्र कुप्पुस्वामि के साथ प्रवेश। कुप्पुस्वामि सात वर्ष का बालक है। मस्तक पर शैवी तिलक और गले में रुद्राक्ष की माला है।)

वेंगु अय्यरह्नह्न(नारद जी को देख कर) प्रणाम करता हूँ महात्मन्! (सिर झुकाते हैं)

नारदह्नह्नकल्याण हो पुत्र!

(कुप्पुस्वामि चरण छूता है)

नारदह्नह्नभक्त बनो बच्चा! (वेंगु अय्यर से) तुम यहीं रहते हो?

वेंगु अय्यरह्नह्नहाँ, प्रभो!

नारदह्नह्नठीक है, यह ग्राम तुम-जैसे देवताओं के लिए ही है।

वेंगु अय्यरह्नह्नआपके श्रीचरण कहाँ से पधारे हैं महाराज?

नारदह्नह्नद्वारकापुरी से घूमता हुआ इधर आ पहुँचा हूँ। इस ग्राम की सुन्दरता देख कर कुछ दिन यहीं विश्राम करने का निश्चय किया है।

वेंगु अय्यरह्नह्नहमारे बड़े भाग्य हैं, जो आपके दर्शन मिले। चलिए भगवन्, आज सेवक का आतिथ्य स्वीकार कीजिए।

नारदह्नह्नचिन्ता न करो, फिर देखा जायेगा। अभी तो यहाँ कुछ दिन विश्राम करूँगा ही। मैं तुमसे बड़ा प्रसन्न हूँ। भगवान् करें, तुम्हारा यह बालक अप्पय्य दीक्षित के समान लोकोपकारक बने!

वेंगु अय्यरह्नह्न(प्रसन्न हो कर) आप भगवान्, अप्पय्य दीक्षित को जानते हैं प्रभो!

नारदह्नह्नउसे कौन नहीं जानता बेटा! (कुतूहल से) क्यों? तुम्हारा कोई विशेष अभिप्राय है?

वेंगु अय्यरह्नह्न(सिर झुका कर) अप्पय्य दीक्षित मेरे वंशकुल-दीपक थे, महाराज!

नारदह्नह्न(चौंक कर) तुम्हारे वंशकुल-दीपक?

वेंगु अय्यरह्नह्नहाँ महामुने! उनकी अठारहवीं पीढ़ी में इस अधम ने जन्म लिया है!

नारदह्नह्न(गद्गद कण्ठ से) बड़े भाग्यशाली हो! (स्वगत) अहा, इनके ही घर अवतार लेने का वरदान है। (कुप्पुस्वामि को ध्यानपूर्वक देख कर) ठीक है, इस बालक की ललाट की रेखाएँ स्पष्ट बतला रही हैं कि यह एक दिन संसार का महान् पुरुष बनेगा। इसके दर्शन करके आज मेरी आत्मा को शान्ति मिल रही है। मैं धन्य हो गया। (नेत्र मूँद कर मन-ही-मन प्रणाम करते हैं।)

वेंगु अय्यरह्नह्न(चुप देख कर) आप क्या सोच रहे हैं ऋषिवर?

नारदह्नह्नयही कि तुम कितने भाग्यवान् हो। तुम्हारा यह बालक कोई साधारण पुरुष नहीं, इसकी मस्तक-रेखा बड़ी महत्त्वपूर्ण प्रतीत हो रही हैं। यह संसार को कोई महान् सन्देश देगा, इसका जन्म किसी विशेष कार्य के लिए हुआ है, यह सच समझो और अधिक क्या कहूँ। नारायण! नारायण!

(प्रस्थान)

कुप्पुस्वामिह्नह्नपिता जी, ये कौन थे?

वेंगु अय्यरह्नह्नसंसार से विरक्त और शान्ति के अवतार मेरे लाल!

कुप्पुस्वामिह्नह्नविरक्त क्यों हैं?

वेंगु अय्यरह्नह्नक्या करोगे पूछ कर, आओ चलें।

(पट-परिवर्तन) *(क्रमशः)*

गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का इस संसार में उद्देश्य

(गुरुदेव के महाप्रयाण के १० वर्ष पश्चात् १९७३ की गुरुपूर्णिमा पर दिया गया प्रवचन)

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

हमारे सामने प्रत्येक वर्ष यह सर्वश्रेष्ठ सुअवसर इसलिए आता है कि हम थोड़ा मनन करें गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के उस महान् उद्देश्य पर जिसके लिएह्वह्वकहा जा सकता है किह्वह्वउनका वास्तव में इस धरा पर दिव्यता की किरण के रूप में अवतरण हुआ।

इस जगत् में उनके उद्देश्य के महान् महत्त्व पर चिन्तन करना हमारा विषय होगा। सम्भवतया यह एक सर्वोत्कृष्ट सेवा होगी जो उनके अनुयायी और शिष्य उनके पावन चरणों में सेवा के रूप में समर्पित करेंगे, क्योंकि कोई भी गुरु के प्रति की गयी सेवा इतनी उत्तम, इतनी परिपूर्ण नहीं मानी जाती, जितना की गुरु के उद्देश्य के प्रति स्वयं की आन्तरिक अनुकूलता स्थापित करना है। शारीरिक सेवा तथा अन्य बाह्य सेवाएँ भी होती हैं, किन्तु जब आन्तरिक अनुकूलता (समरसता), गुरु के उद्देश्य के प्रति, अभिप्राय के प्रति तथा उनके दृष्टिकोण के भाव के प्रति न हो तो वह सेवाएँ अधूरी रह जाती हैं तथा अपना उद्देश्य पूरा नहीं करतीं। अतः उनके महान् उद्देश्य ने जो दिव्य जीवन संघ तथा मानव-सेवा, सांस्कृतिक पुनरुत्थान इत्यादि के रूप में बाह्य रूप लिये हैं उनके प्रति उत्साह, श्रद्धा और भक्ति के साथ-साथ हम अपना ध्यान उनके उद्देश्य के केन्द्रीय बिन्दुह्वह्वजो कि हम कह सकते हैं कि उनके सम्पूर्ण जीवन का, उनके कार्यों और इस जगत् में उनकी गतिविधियों का सार-तत्त्व हैह्वह्वपर स्थिर करेंगे।

जिस उद्देश्य के लिए वे आये, वह हैह्वह्वआध्यात्मिक जीवन की धारणा का पुनर्निर्माण। आध्यात्मिक जीवन की विचार-धारणा इतनी ही पुरानी है जितनी कि सृष्टि-रचना। आध्यात्मिकता किसी सन्त द्वारा किया गया कोई नवीन प्रवर्तन नहीं है। किन्तु प्रत्येक सन्त अथवा मनीषि एक विशेष उद्देश्य के लिए आता हैह्वह्वयथा इस विचार-धारणा के किसी पहलू-विशेष पर बल देने, उसका महत्त्व बताने अथवा विशेष रूप से प्रकाश डालने के लिए वह आता है, किन्तु समय के साथ यह व्यक्ति के सामान्य जीवन के रूप में मन्द पड़ जाता है तथा आध्यात्मिकता पुनः मनुष्य की सत्ता की केन्द्रीय शक्ति न रह कर जीवन की सामान्य गतिविधियों का एक भाग बन कर रह जाती है।

सहज रूप में हम कह सकते हैं कि गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज हमारे युग की सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक विभूतियों में से थे, वे दृढ़-निश्चयी थे तथा उनकी शिक्षाओं का मुख्य उपदेश जो उन्होंने दिया वह जीवन के लक्ष्य से

सम्बन्धित था। अन्य सभी कार्यक्रम, सभी काम, कर्तव्य और गतिविधियाँ इस आध्यात्मिक लक्ष्य की पूर्ति के लिए हैं जो कि धीरे-धीरे मानव-व्यक्तित्व से दिव्यत्व को प्रकटीकृत करने के लिए सतत संघर्ष है। यह एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण बिन्दु है जिस पर बल देने के लिए वे आये, ताकि कहीं हम इसे अपने जीवन के अन्य अनेक कर्तव्यों में से एक काम न मान बैठें, कहीं हम इसका अर्थ, इसका महत्त्व न भुला बैठें। यह हमारे जीवन के बहुत से कार्यों में से एक कार्य नहीं है। यह तो हमारे जीवन का एकमात्र पूर्णरूपेण कर्तव्य है, जिसके अन्य सब कार्य उपसाधन, सहायक, तैयारी के साधन तथा सहयोगी के स्थान पर हैं।

जैसा कि मैंने कहा, वे आध्यात्मिकता की धारणा का पुनर्निर्माण करने के लिए आयेह्वह्वजो मुख्यतया इस तथ्य में निहित है कि अध्यात्म संसार के समस्त प्राणियों की सम्पूर्ण विकास प्रक्रिया का आधार एवं नींव है। जीवन परमात्मा की ओर बढ़ने की एक प्रक्रिया है। जीवन एक ईश्वरोन्मुखी ऊर्ध्वगति है, और जीवन की रहस्यात्मकता का अर्थ मानव-जीवन से ही है, यह आवश्यक नहीं है। मानव-जाति मात्र से कहीं अधिक विस्तृत है जीवन का अर्थ । विश्व का सम्पूर्ण जीवन, सृष्टि का समस्त कार्य परमात्म-साक्षात्कार की ओर अबाध गतिशील प्रक्रिया है। इसी दृष्टि से कहा जाता है कि विश्व एक प्रक्रिया है। यह एक जड़ मृतावस्था में हमारे सामने पड़े होने के समान नहीं है।

पदार्थ और जीवन, मन और बुद्धिह्वह्वये सभी आध्यात्मिक अनुभूति की ओर जीवन के प्रकटीकरण की विभिन्न अवस्थाएँ हैं। अपने कार्यालयों में जो कार्य आप करते हैं, अपने जीवन के विभिन्न व्यवसायों में जो कर्तव्य आप निभाते हैं, आपका अस्तित्व स्वयं अपने-आपमें, जो श्वास आप लेते हैं, जिन विचारों का आप चिन्तन करते हैं, जो शब्द आप बोलते हैंह्वह्वसभी कुछ आध्यात्मिकता के ही विभिन्न रूप हैं।

वैराग्य एवं संन्यास, त्याग एवं आध्यात्मिकता गुरुदेव के व्यक्तित्व के प्रमुख उपादान एवं सूत्र थे। वे त्याग की प्रज्वलित अग्नि तथा अध्यात्म की अग्नि थे, हमारे समक्ष एक ऐसे ज्वलन्त आध्यात्मिक व्यक्तित्व थे जिनके समान अन्य दिखायी देना अत्यन्त कठिन है। दूसरे शब्दों में गुरुदेव का यह व्यक्तित्व आज भी हमारे साथ लिपटा हुआ है। आज अभी इस क्षण भी, यद्यपि उनके भौतिक व्यक्तित्व ने भले ही स्वयं को पंचभूतों में समेट लिया है; किन्तु आध्यात्मिक व्यक्तित्व हमारे साथ है।

गुरु और शिष्य का सम्बन्ध भौतिक सम्बन्ध नहीं होता। यह दो शरीरों अथवा दो व्यक्तियों के मध्य अस्थायी रूप से स्थापित, शरीरों के साथ ही समाप्त हो जाने वाला सम्बन्ध नहीं है। नहीं, सत्य इससे कहीं परे है। शिष्य अपने गुरु से जो दीक्षा प्राप्त करता है, वह ऐसा सम्पर्क है जो गुरु और शिष्य के मध्य आन्तरिक एवं आध्यात्मिक है। यह दो आत्माओं का परस्पर सम्बन्ध है, दो शरीरों का नहीं।

इस दृष्टिकोण से, गुरु कभी मरता नहीं, न ही कभी गुरु का जन्म होता है। परमात्मा स्वयंह्वह्वपरम ईश्वर स्वयं महान् शिक्षक के रूप में इन गुरुओं के व्यक्तित्व के माध्यम द्वारा आते हैं। यह व्यक्तित्व भले ही प्रायः मनुष्य रूप में हों, और जिस माध्यम से सन्देश प्रेषित किये जाते हैं वह भले ही द्रष्टव्य रूपों द्वारा हों, किन्तु वह सन्देश शाश्वत होता है। यह परमात्मा का प्रकाश होता है जो लौकिक पवन से बुझाया नहीं जा सकता। गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी के व्यक्तित्व में ऐसा ही प्रकाश उद्भासित था। क्या हमें स्वयं को त्रिवार आशीर्वादित नहीं समझना चाहिए, जब कि हममें से अधिकांश को उनसे आशीर्वाद प्राप्त करने का, उन्हें साक्षात् देख पाने का, उनके साथ रहने का और उनके नित्य सम्पर्क में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ हैह्वह्वमानो भगवान् को ही अपने मध्य विचरण करते हुए देख रहे होंह्वह्वक्या यह ऐसा ही नहीं था?

और अभी भी वे हैं। अन्य कोई नहीं, केवल वे ही, अन्य कुछ नहीं, केवल उनके अदृश्य हाथों के ही कारण दिव्य जीवन संस्था की लहर एवं उसकी गतिविधियाँ इतनी द्रुत गति से विकसित हो रही हैं। हम कह सकते हैं कि उन्होंने स्वयं को

एक रूप से निकाल कर दूसरे में प्रविष्ट कर दिया है। रूप-परिवर्तन व्यक्तित्व की समाप्ति नहीं है; यह तो उसी शक्ति, उसी क्षमता के कार्य की पद्धति ने भिन्न रूप धारण कर लिया है। सर्वव्यापिता अथवा अन्तर्निहितता अब उनका स्वरूप हो गया है।

अपने आध्यात्मिक व्यक्तित्व के अन्तर्निहित स्वरूप में, अब वह हमारे माध्यम से कार्य कर रहे हैं, हमारे द्वारा बोल रहे हैं, हमें गति प्रदान कर रहे हैं, हमें धारण किये हुए हैं। दिव्य जीवन संघ अपने-आपमें एक आश्चर्य है। यह एक चमत्कार ही है। इस संघ के बहुत से शिष्य, अनेक प्रशंसक प्रायः पूछा करते थे, ''क्या स्वामी जी कुछ चमत्कार दिखाते थे? जैसे हमने अन्य महान् सन्त गुरुओं के सम्बन्ध में सुना है, क्या उन्होंने भी कुछ ऐसे चमत्कारपूर्ण कार्य किये?'' इस संघ के अस्तित्व से बढ़ कर और बड़ा आश्चर्य, अद्भुत चमत्कार क्या हो सकता हैह्वह्वजिस ढंग से यह कार्यान्वित है तथा जिस प्रकार इसने मानव मात्र के हृदयों पर प्रभाव डाला है, लोगों के हृदयों को जैसे परिवर्तित किया है तथा जिस प्रकार आध्यात्मिक जीवन के महत्त्व पर बल दिया हैह्वह्वमानव के मन में आत्मावतरण कर देने से बढ़ कर और चमत्कार क्या हो सकता है? यह चमत्कार उन्होंने किया है, और अभी भी कर रहे हैं। हम सचमुच प्रसन्न हैं, हम आशीर्वादित हैं।

हम त्रिवार आशीर्वादित हैं और परम सौभाग्यशाली हैं। इसमें किंचित् भी सन्देह नहीं है कि भगवान् की हम पर असीम कृपा है। और मैं स्वयं विश्वासपूर्वक कह सकता हूँ कि मैं स्पष्ट देख रहा हूँ कि भगवान् हम पर निश्चित रूप से प्रसन्न हैं। भले ही हम डगमगाते कदमों से चल रहे हों, तो भी सच्चाई से एवं निष्ठापूर्वक दिव्य कृपा की प्राप्ति की ओर ही बढ़ रहे हैं।

आज के इस पावन दिवस पर गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के महान् उद्देश्य का केन्द्र-बिन्दुह्वह्वइस विश्व में आध्यात्मिक जीवनह्वह्वहमारे चिन्तन-मनन का विषय हो। भगवान् की कृपा आप सब पर हो!

(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

ज्ञान-गंगा

यह जगत् जो आप देखते हैं, वह ईश्वर के सिवा वास्तव में और कुछ भी नहीं है।

वस्तुओं को ठीक-ठीक देखिए। उन्हें तत्त्वतः देखिए। यही सम्यक् दर्शन है।

शुद्धता तथा आत्मा पर ध्यान के द्वारा नानात्व की भ्रान्ति का अतिक्रमण कर एकता की अवस्था को प्राप्त कीजिए।

आत्म-साक्षात्कार कर लेने पर यह जगत् आपके लिए विलुप्त हो जायेगा।

जगत् की प्रतीति से परे सत् तथा चेतन का तत्त्व है, जो सभी भूतों की आत्मा, एक तथा नित्य है।

ब्रह्म ही यह सारा जगत् है। पृथ्वी और आकाश, आपके मन तथा प्राणह्वह्वसभी उसी में गुँथे हुए हैं।

हर वस्तु का मूल उसी ब्रह्म में ही है।

जड़ पदार्थ किसी निश्चित उद्देश्य से, चेतन वस्तु के नियन्त्रण तथा पथ-प्रदर्शन के बिना कार्य नहीं कर सकता।

यह कहना युक्ति-संगत नहीं है कि जगत् स्वतः ही प्रकट हो जाता है।

जड़ प्रकृति अथवा परमाणु को जगत् का कारण मानना भी सम्भव नहीं है।

स्वामी शिवानन्द

बाल-स्तम्भ :

मोटी आंटी २

स्वामी रामराज्यम्

(बच्चो, इस धारावाहिक कहानी में तुम पढ़ रहे हो मोटी आंटी के जीवन से जुड़े हुए कुछ प्रेरक प्रसंग। प्रत्येक प्रसंग एक मोती की तरह है, जो मन की पिटारी में सँभाल कर रखने योग्य है। इन मोतियों का धन तुम्हारी जीवन-यात्रा में बहुत काम आयेगा।)

२. अनोखी खरीदारी

एक दिन दो-तीन पिंजरों में कुछ तोतों को ले कर एक तोते बेचने वाला आया। मोटी आंटी ने खिड़की से उसे देखा। मुझसे बोलींह्लह्व''उसे रोकना।''

तोते बेचने वाले से वह बोलींह्लह्व''कितने-कितने के हैं तोते?''

मैंने पूछाह्लह्व''मोटी आंटी, तोता खरीदोगी?''

''तोता नहीं, तोतेह्लह्व'' मोटी आंटी मुस्करा कर बोलीं।

मैं उनकी मुस्कान का अर्थ समझ नहीं पाया।

मोटी आंटी तोते बेचने वाले से कहने लगींह्लह्व''सारे तोतों के दाम बताओ। मैं सारे तोतों को खरीद लूँगी।''

मैं सोचने लगाह्लह्वमोटी आंटी क्या करेंगी सारे तोतों को ले कर? कहाँ रखेंगी इन्हें?

तोते बेचने वाले ने दाम बता दिये। मोटी आंटी ने उसे पैसे दे दिये।

तोते बेचने वाला बोलाह्लह्व''पिंजरे लाइए, तो उनमें तोते डाल दूँ।''

''पिंजरे!'' कह कर मोटी आंटी हँसीं।

फिर उन्होंने तोते बेचने वाले के पिंजरों के दरवाजे खोल दिये। सारा तोते फुर्र से उड़ गये।

मोटी आंटी बहुत जोर से हँसीं। कहने लगींह्लह्व''आकाश ही इनका घर है। मैंने इन्हें इनके घर भेज दिया है।'' फिर वह तोते बेचने वाले से बोलींह्लह्व''भैया, तू यह धन्धा छोड़ दे। मैं तुझे किसी दूसरे धन्धे में लगवा दूँगी। पूँजी लगाने के लिए कुछ धन भी दे दूँगी। प्यारी-प्यारी चिड़ियों को जेल में बन्द करके मत रखा कर। ऊपर देख, खुश हो कर कैसा चहक रहे हैं ये तोते! तूने इनकी खुशी छीन ली थी। इनकी खुशी इनको वापस मिल गयी है। इस खुशी में मैं तेरा मुँह मीठा करूँगी।''

यह कह कर मोटी आंटी घर के अन्दर से मिठाई का डिब्बा ले आयीं। आधी मिठाई तोते बेचने वाले को दे दी। बाकी मिठाई उड़ते हुए तोतों को देखने के लिए इकट्ठा हो गये बच्चों को बाँट दी।

तोते बेचने वाला चला गया। मोटी आंटी बच्चों से कहने लगींह्लह्व''मूरख है यह तोते बेचने वाला। चिड़ियों का दिल दुखाता है। कोई इसे ही जेल में बन्द कर दे; कितना दुःख होगा उसे! इसी तरह पिंजरों में बन्द बेजबान तोतों को भी कितना दुःख होता होगा!''

तभी वहाँ खड़ी एक पड़ोसिन दौड़ती हुई अपने घर गयी और वहाँ से एक पिंजरा ले आयी। पिंजरे में एक तोता था। पड़ोसिन ने मोटी आंटी को पिंजरा पकड़ा दिया। मोटी आंटी ने उस पिंजरे का भी दरवाजा खोल दिया। तोता उड़ गया। मोटी आंटी ने हँसते हुए पड़ोसिन को चिपटा लिया।

(क्रमशः)

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय के समाचार

'शिवानन्द होम' द्वारा सेवा

''शिवानन्द होम ऐसे लोगों के लिए प्रेमपूर्ण देख-भाल का केन्द्र हैं जो असहाय और मरणासन्न स्थिति में सड़क पर पड़े पाये जाते हैं, जिनकी देख-रेख करने वाला कोई नहीं है'' (स्वामी चिदानन्द)। ये वह लोग हैं जो आवास विहीन हैं, जो स्थायी अथवा अस्थायी रूप से रोगग्रस्त हैं, जो अपने साथियों से बिछुड़ गये हैं या उनके द्वारा अकेले छोड़ दिये गये हैं।

उसका पन्द्रह वर्ष की कोमल अवस्था में विवाह हो गया और धीरे-धीरे पाँच बच्चे भी पैदा हुए। उसका पति दर्जी था और वह जीवन-निर्वाह के लिए लोगों के घरों में जा कर छोटे-मोटे काम किया करती थी। एक दुर्भाग्यपूर्ण दिन क्या हुआ कि उसे और उसके दो छोटे बच्चों को कुछ मिला कर एक पेय पदार्थ पीने को किसी ने दिया, जिसे पीते ही तीनों जन अपनी सुध-बुध खो बैठे और पागल जैसे हो गये। ऐसी विक्षिप्त दशा में उसके पति ने उसे घर से निकाल दिया। रास्ते में उसके दोनों बच्चे भी खो गये और उसको दिल्ली की ब्लू-लाइन बस रौंद कर चली गयी, उसे अस्पताल ले जाया गया, जहाँ कुछ सप्ताह तक चिकित्सा चलती रही। उसकी टाँग पर घाव थे, इसी दौरन उसका गर्भपात भी हो गया। उसे अस्पताल से जब छुट्टी मिली तो वह सड़क पर पूर्णतया निराश्रित, एकाकी और अर्धविक्षिप्त-सी मानसिक स्थिति में थी। ऐसी स्थिति में वह हर तरह के शारीरिक कष्ट झेलती, सड़कों पर भटकती और ठोकरें खाती हुई किसी तरह ऋषिकेश पहुँच गयी जहाँ कभी पैदल, कभी रिक्शा इत्यादि के सहारे नीलकण्ठ, चण्डीदेवी इत्यादि विभिन्न मन्दिरों की तीर्थयात्रा भी करती रही। उसकी टाँगों के घाव तो ठीक होने वाली स्थित से बहुत दूर हो चुके थे। वह स्वयं ही जिस किसी भी कपड़े को उठा कर उन पर लपेट लेती थी। नीलकण्ठ से वापस लौटते समय वह बलहीनता का शिकार हो गयी और किसी भले आदमी ने उसे उठा कर नीचे तक पहुँचाया। फिर एक दूध वाले ने अपने ठेले में उसे बिठा लिया और बाद में २० रुपये हाथ में थमा कर 'होम' से कुछ दूरी पर छोड़ दिया। उस समय उसकी स्थिति निर्जलीकरण, आमाशय के संक्रमण तथा टाँगों के घावों की गैंग्रीन से ग्रस्त रोगी की थी। उसके घावों में कीड़े चल रहे थे। जब उसके सिर की जुएँ समाप्त करने के लिए उसका सिर मूँड कर साफ किया जा रहा था तब पहला प्रश्न जो उसने हँसते हुए पूछा, वह था कि ''क्या आप 'ब्यूटी पारलर' (सौन्दर्य-स्थान) में काम करते हैं?'' उसके खुलेपन में जल्दी ही वृद्धि होने लगी और उसने भजन एवं अन्य गीत गाने आरम्भ कर दिये, जो कि आज तक चल रहे हैं। प्रभु ने अपनी करुणा का हाथ बढ़ा कर उसे सड़क से उठाया और अपने आश्रय में, अपने 'विनीत-गृह' में ले लिया जहाँ वह आनन्द से 'उनकी' करुणा के गीत गाती हुई, उनका नाम- संकीर्तन करती हुई ठीक हो रही है। हरे हरे माधव!

''हम यहाँ हैं और बँधे हुए हैंह्वह्वजब तक आप मुक्त नहीं करते! अस्पष्ट कल्पनाएँ कर रहे हैंह्वह्वजब तक आप दर्शन नहीं देते। निरुद्देश्य, अनिर्दिष्ट भटक रहे हैंह्वह्वजब तक आप 'घर' तक नहीं ले चलते। भटकते ही जा रहे हैंह्वह्वजब तक आप हमें नहीं अपना लेते। अनाथ और बहिष्कृत हैंह्वह्वजब तक आप हमें अपना नाम नहीं देते। छुपे हुए और अज्ञात हैंह्वह्वजब तक आप हमारे हृदय में प्रकट नहीं होते। आपके देने से ही, हम कुछ दे सकते हैं। आपकी आवाज़ से ही हम बोल सकते हैं। और आपकी शक्ति से ही हमारी बल-हीनता समाप्त हो सकती है।''

('निकोलि नौर्डमैन' से)

''भूखे को भोजन दें! नग्न को वस्त्र दें! रोगियों की सेवा करें! यही दिव्य जीवन है।'' **स्वामी शिवानन्द**

मुख्यालय आश्रम में नवरात्रि तथा विजयादशमी उत्सव

सर्वरूपमयी देवी सर्वं देवीमयं जगत्।
अतोऽहं विश्वरूपां तां नमामि परमेश्वरीम्।।

(उस परमेश्वरी भगवती को मेरा प्रणाम है जो स्वयं ही समस्त रूपों में व्यक्त हो रही हैं तथा समस्त जगत् जिनसे परिव्याप्त है।)

नवरात्रि वह पावन अवसर है जिसमें माँ जगदम्बा का परमेश्वरी के रूप में नौ-दिवसीय पूजन किया जाता है। गत वर्षों की ही भाँति इस वर्ष भी २८ सितम्बर से ५ अक्तूबर २०११ तक मुख्यालय आश्रम में नवरात्रि उत्सव अत्यन्त श्रद्धा, भक्ति एवं उत्साह पूर्वक मनाया गया। समस्त कार्यक्रम शिवानन्द सत्संग भवन में सम्पन्न किया गया। माँ भगवती के तीनों रूपोंह्लश्री महादुर्गा, श्री महालक्ष्मी एवं श्री महासरस्वती ह्लके अत्यन्त मनोहर चित्र विशेष रूप से तैयार किये गये तथा भव्य रूप से सुगन्धित पुष्प-गुच्छों, रंग-बिरंगी विद्युत्-लड़ियों तथा भाँति-भाँति के रंगीन रेशमी वस्त्रों से सुसज्जित वेदी पर सजाये गये थे।

पराशक्ति माँ भगवती की इन सभी दिनों में अत्यन्त श्रद्धा-भक्ति सहित महापूजा की गयी। नित्य प्रातःकाल कार्यक्रम का शुभारम्भ अत्यन्त सुन्दर सजे हुए अतिथि-भवन के एक कक्ष में विधिवत् चण्डी-पाठ से किया जाता था। रात्रि के सत्संग में नियमित दैनिक प्रार्थना एवं पारायण के साथ-साथ श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ संस्कृत में परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज, अँगरेजी में परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज तथा हिन्दी में श्री स्वामी राधाकृष्णानन्द जी महाराज द्वारा किया जाता था। इसके उपरान्त अष्टोत्तरशतनामावली सहित माता की पुष्पार्चना तथा अन्त में आरती एवं विशेष प्रसाद का वितरण किया जाता था।

महानवमी के दिन अर्थात् ५ अक्तूबर को प्रातः अत्यन्त श्रद्धा पूर्वक सरस्वती माँ भगवती की पूजा, अर्चना एवं आरती की गयी। उसके पश्चात् कन्या-पूजा हुई। नौ बालिकाओं की देवी के नौ प्रतिनिधियों के रूप में पूजा-अर्चना की गयी; फिर उन्हें वस्त्र, उपहार, भेंट एवं भोजन-प्रसाद निवेदित किया गया। आश्रम यज्ञशाला में विशेष रूप से चण्डी-हवन भी सम्पन्न किया गया। रात्रि सत्संग में सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का नवरात्रि सन्देश परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने पढ़ कर सुनाया।

आश्रम के मातृ-सत्संग द्वारा भी २८ सितम्बर से ४ अक्तूबर तक शिवानन्द सत्संग भवन में प्रातः ९ से ११ बजे तक, २ घण्टे नित्य विशेष सत्संग के रूप में देवी माँ की पूजा की जाती रही। इसमें श्री ललिता सहस्रनाम पारायण तथा पराशक्ति माँ की महिमा-वर्णन में भजन एवं कीर्तन होता था।

६ अक्तूबर, विजयादशमी के पावन दिवस पर पूर्वाह्न में पराशक्ति माँ की विशेष पूजा-अर्चना सहित कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया। इस दिन विद्यारम्भ दिवस होने के नाते सद्ग्रन्थों ह्लह्लयथा वेद, उपनिषद, ब्रह्मसूत्र, श्रीमद्भगवद्गीता, वाल्मीकि रामायण, महाभारत, श्रीमद्भागवत, पातंजल योगसूत्र एवं सद्गुरुदेव की 'साधना' पुस्तकह्लह्लमें से परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने चयनित अंशों का पाठ किया। परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने समस्त पावन मन्त्रों का उच्चारण किया। पातंजल योगसूत्र सम्बन्धी ४ एमपीथ्री तथा दो पुस्तकोंह्लह्ल'गीता-प्रबोधिनी' तथा 'इन्सपाइरिंग स्टोरीज़' (प्रेरक कथाएँ) का विमोचन भी इस शुभ अवसर पर किया गया।

सायंकाल में श्री विश्वनाथ घाट पर माँ गंगा की पूजा विशेष अर्चना एवं सहस्रों दीप प्रवाहित करने के साथ की गयी। रात्रि सत्संग में दैनिक नियमित पारायण के अतिरिक्त सुमधुर भजन-संकीर्तन आश्रम के संन्यासियों, ब्रह्मचारियों एवं भक्तों द्वारा प्रस्तुत किया गया।

आश्रम के समस्त अन्तेवासी, अतिथि, एवं दूर-दूर से आये हुए सभी भक्त तथा स्थानीय लोग भी नवरात्रि एवं विजयादशमी महोत्सव में अत्यन्त श्रद्धा, भक्ति और उत्साह पूर्वक सम्मिलित हुए।

माँ भगवती की कृपा-वृष्टि सब पर हो!

मुख्यालय आश्रम में दीपावली महोत्सव, गो-पूजा तथा गोवर्धन-पूजा का कार्यक्रम

''ज्योतियों की ज्योति, स्वप्रकाश आन्तरिक आत्म-ज्योति आपके हृदय-कक्ष में सदैव सतत प्रकाशित है। इस परम ज्योति पर अपना ध्यान केन्द्रित करें तथा आत्म-प्रकाश प्राप्त करके वास्तविक दीपावली का आनन्द लें।'' ब्रह्मसद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

मुख्यालय आश्रम में २६ अक्तूबर २०११ को दीपावली का पावन दिवस अत्यन्त आनन्द एवं आध्यात्मिक उत्साहपूर्वक मनाया गया। सारा आश्रम रंग-बिरंगे विद्युत् बल्बों से तथा सहस्रों मिट्टी के दीपकों से जगमगा रहा था। उत्सव का स्थान, समाधि मन्दिर विविध रंगों की विद्युत् लड़ियों तथा झालरों एवं वन्दनवार से भव्य रूप से सजा हुआ था। समृद्धि एवं शुभ-मंगल की देवी माँ लक्ष्मी का सुन्दर चित्र सुसज्जित काष्ठवेदिका पर सजाया गया था।

रात्रि सत्संग में नियमित स्तोत्र-पाठ के अतिरिक्त कुमारी विद्यानन्दी ने सुमधुर आत्मोत्थापक वीणावादन के रूप में माँ भगवती तथा सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के पावन चरणों में भेंट प्रस्तुत की। उसके उपरान्त परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने सद्गुरुदेव का दीपावली-सन्देश पढ़ा तथा कनकधारा स्तोत्र का पाठ किया। दो पुस्तकें एवं एक पुस्तिका परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने इस शुभ अवसर पर विमोचित कीं। इसके बाद महालक्ष्म्याष्टक पाठ तथा महालक्ष्मी अष्टोत्तरशत नामावली के साथ पुष्पार्चना की गयी। विशेष प्रसाद-वितरण सहित कार्यक्रम समाप्त हुआ।

आगामी दिवस, २७ अक्तूबर को आश्रम की विश्वनाथ गोशाला में गो-पूजा तथा गोवर्धन-पूजा हुई। परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज तथा परम पूज्य श्री स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज ने एवं आश्रम के अन्य संन्यासियों और ब्रह्मचारियों ने इस पूजा में भाग लिया। सम्पन्नता की प्रकट देवी भगवती लक्ष्मी के रूप में गौओं की पूजा की गयी, उन्हें खिलाया गया तथा गोपालों को भी सम्मानित किया गया। गो माता, श्री कृष्ण भगवान् की आरती तथा औपचारिक दावत के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

परम पिता परमात्मा तथा सद्गुरुदेव की कृपा हम सब पर हो कि हम अपनी आत्मा को प्रकाशित करते हुए वास्तविक दीपावली का आनन्द प्राप्त कर सकें!

परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज ने भारत में ही कुछेक सांस्कृतिक यात्राएँ कीं। १९ जून २०११ को दिल्ली के 'संकल्प' के आमन्त्रण एवं अनुरोध पर स्वामी जी महाराज उनके 'व्यास-पूजा उत्सवब्रह्म२०११' में सम्मिलित हुए। 'संकल्प' जन-कल्याण शिक्षा समिति (रजि.), दिल्ली द्वारा चलायी जा रही एक परियोजना है। यह १९८६ में प्रारम्भ की गयी थी और तभी से यह निरन्तर ईमानदार, सच्चे, नेक, राष्ट्रीय भावनाओं से सम्पन्न, नव-परिवर्तन लाने वाले, नूतन विचारशील व्यक्ति तथा इसके साथ ही भारतीय समाज के सुविधाविहीन वर्ग से सम्बन्धित लोगों को देश की सिविल सर्विसिज़ में सम्मिलित करने के लिए प्रयत्नशील है। यह ऐसे युवा पुरुषों एवं महिलाओं को सिविल सर्विसिज परीक्षाओंब्रह्मलिखित एवं मौखिक, दोनोंब्रह्मकी तैयारी के लिए सुविधाएँ प्रदान करती है तथा साथ ही ईमानदारी, एकता, दया, भक्ति, सेवा के प्रति समर्पण एवं निष्ठा इत्यादि भारतीय मूल्यों को उनमें विकसित करने का प्रयत्न करती है। यह श्री सन्तोष तनेजा के नेतृत्व में एक लाभनिरपेक्ष संस्था है तथा अत्यधिक अल्प मूल्य पर आधारित, पूर्णतया निःस्वार्थ सेवा दे रही है। एक समर्पित सदस्यों का समूह इसमें स्वैच्छिक

सेवाएँ दे रहा है, जिसके परिणाम-स्वरूप यहाँ से शिक्षा प्राप्त विद्यार्थियों के वर्षों से निरन्तर हर वर्ष सर्वोत्तम परिणाम आते हैं। यहाँ के विद्यार्थियों की संख्या, सफल विद्यार्थियों की संख्या तथा क्षेत्र-विस्तार निरन्तर वृद्धि की ओर अग्रसर हो रहा है और अब तो यह देश के सभी क्षेत्रों को सेवा दे रहा है। इस वर्ष २०११ में सिविल सर्विसिज़ परीक्षा में सफलता प्राप्त करने वाले ८०० विद्यार्थियों में से ४३१ अर्थात् ५० प्रतिशत से अधिक 'संकल्प' द्वारा जाने वाले परीक्षार्थी हैं जो कि विशेष रूप से सराहनीय है। प्रतिवर्ष 'संकल्प' सफल परीक्षार्थियों को सम्मानित करने के लिए 'व्यास पूजा उत्सव' किया करता है जिसके द्वारा सफलता प्राप्त परीक्षार्थियों को आगे के लिए निर्देशन भी दिये जाते हैं। स्वामी जी महाराज ने इस कार्यक्रम में अध्यक्ष पद को सुशोभित किया तथा परीक्षार्थियों को बहुमूल्य शिक्षा, उपदेश एवं जीवन तथा पद सेवा के लिए आशीर्वाद भी दिये।

३१ अगस्त से ५ सितम्बर तक स्वामी जी महाराज भुवनेश्वर, ओडिशा में स्वामी शिवानन्द सैंटेनरी बौयज़ हाई स्कूल, खण्डगिरि गये। १ सितम्बर विनायक चतुर्थी के दिन श्री स्वामी जी ने गणेश-पूजा में भाग लिया। २ सितम्बर को श्री स्वामी जी कार्यकारिणी समिति की सभा में तथा वार्षिक सार्वजनिक सभा में सम्मिलित हुए। प्रातः और सायं श्री स्वामी जी महाराज विद्यालय की प्रार्थना-सभा में भी सम्मिलित हुए और किसी-किसी दिन विद्यार्थियों को सम्बोधित भी किया। ३ सितम्बर को श्री स्वामी जी महाराज ने अध्यापकों के साथ बातचीत की तथा उन्हें सम्बोधित करते हुए निर्देशन भी दिये।

४ सितम्बर को दिव्य जीवन संघ, खण्डगिरि के श्री सुदर्शन दास के निवास-स्थान पर एक सत्संग रखा गया था, जिसमें भाग लेते हुए श्री स्वामी जी महाराज ने भक्तों को संक्षिप्त आशीर्वचन भी दिये। उस दिन राधा अष्टमी थी।

७ से ११ सितम्बर तक बारिपदा, मयूरभंज जिले में होने वाले दिव्य जीवन संघ के क्षेत्रीय सम्मेलन में भी श्री स्वामी जी महाराज गये। ७ सितम्बर को श्री स्वामी जी महाराज ने रक्त-दान शिविर का उद्घाटन किया। यह रोटरी क्लब परिसर में रेड क्रास द्वारा आयोजित किया गया था। श्री स्वामी जी महाराज विश्व-शान्ति हेतु शाखा द्वारा आयोजित यज्ञ में भी सम्मिलित हुए। उसी दिन पंच-दिवसीय क्षेत्रीय आध्यात्मिक सम्मेलन तथा साधना शिविर प्रारम्भ हुआ। यह बारिपदा शाखा द्वारा आयोजित किया गया था। सारे ओडिशा में से बहुत से भक्तों ने इसमें भाग लिया। परम पूज्य गजपति महाराज श्री दिव्य सिंह देव जी भी इसमें सम्मिलित हुए थे। दिव्य जीवन संघ के बहुत से सन्त, प्राध्यापक तथा अन्य सुप्रसिद्ध महानुभाव भी पधारे थे। स्वामी जी महाराज ने उद्घाटन सत्र में सम्बोधित करते हुए आशीर्वचन दिये।

८ सितम्बर को शाखा द्वारा सद्गुरुदेव स्वामी शिवानन्द जी महाराज का जन्म-दिवस पादुका-पूजा इत्यादि सहित मनाया गया, जिसमें स्वामी जी महाराज भी सम्मिलित हुए। स्वामी जी महाराज आध्यात्मिक सम्मेलन तथा साधना शिविर में अध्यक्ष पद पर आसीन थे तथा साथ ही उन्होंने ब्राह्ममुहूर्त प्रार्थना, पूर्वाह्न तथा अपराह्न इत्यादि विभिन्न सत्रों में ८ से ११ सितम्बर तक सभी दिन आशीर्वचन भी दिये।

क्षेत्रीय आध्यात्मिक सम्मेलन तथा साधना शिविर हर प्रकार से अत्यन्त सफल रहा। इससे डी. एल. एस. बारिपदा शाखा की गतिविधियों में सक्रियता आयी तथा सदस्यों एवं भक्तों को अत्यन्त प्रेरणा प्राप्त हुई।

१० सितम्बर को स्वामी जी महाराज केन्द्रीय कारागार, बारिपदा में वहाँ के अन्तेवासियों के लिए आयोजित सत्संग में सम्मिलित हुए तथा उन्हें सम्बोधित भी किया। १३ से २० सितम्बर तक श्री स्वामी जी महाराज चिदानन्द हरमिटेज शान्ति आश्रम, बालिगुआली (पुरी) गये। वहाँ १६ एवं १८ को साधना गंगा से सम्बन्धित मीटिंग में भाग लिया। आश्रम कार्यकारिणी समिति के साथ भी विभिन्न विषयों पर विचार-विमर्श किया।

परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के महासचिव परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज १७ अक्तूबर २०११ को 'श्री स्वामी शिवानन्द चैरिटेबल मेमोरियल हास्पिटल' के न्यासियों की समिति की गोष्ठी में सम्मिलित होने के लिए, सद्गुरुदेव की पावन जन्म-स्थली, पत्तमडै गये। श्री स्वामी जी ने पूर्वाह्न में गोष्ठी में भाग लिया तथा अस्पताल के कर्मचारियों एवं रोगियों से बातचीत भी की। अपराह्न में श्री स्वामी जी मदुरै गये तथा वहाँ तिरुमंगलम् में एक अनाथालय 'बॉयज़ टाउन सोसायटी' गये। श्री स्वामी जी ने वहाँ के विद्यार्थियों को नाम-संकीर्तन तथा प्रेरणाप्रद प्रवचन द्वारा आशीर्वादित किया।

१८ की प्रातः श्री स्वामी जी ने मदुरै दिव्य जीवन संघ शाखा के भक्तों को सम्बोधित करते हुए आशीर्वचन दिये। पूर्वाह्न में 'मदुरै इंस्टिट्यूट ऑफ़ सोशल साईंसिज़' के अनुरोध पर श्री स्वामी जी उस संस्था में गये तथा अन्तर-महाविद्यालय विद्यार्थियों को 'आध्यात्मिकता एवं सामाजिक कार्य' विषय पर विशेष प्रवचन दिया। ग्रन्थों में से उद्धृत करते हुए अनेक उदाहरण दे कर श्री स्वामी जी ने समाज-सेवा के कार्यों में आध्यात्मिकता के महत्त्व पर यथेष्ट प्रकाश डाला। श्री स्वामी जी ने विद्यार्थियों तथा प्राध्यापकों द्वारा किये जाने वाले प्रश्नों के उत्तर भी दिये। पत्तमडै से मदुरै के यात्रा-काल में श्री स्वामी जी महाराज के साथ 'श्री स्वामी शिवानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय' के महाप्रबन्धक श्री स्वामी जगदीश्वरानन्द जी महाराज भी रहे।

श्री स्वामी जी २० अक्तूबर २०११ को मुख्यालय आश्रम वापस लौट आये।

६९ वें बेसिक योग-वेदान्त कोर्स का दीक्षान्त समारोह

६९ वें योग-वेदान्त बेसिक कोर्स के दीक्षान्त समारोह का कार्यक्रम योग-वेदान्त फारेस्ट एकाडेमी के वाचनालय में १८ अक्तूबर २०११ को सम्पन्न हुआ। दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के परमाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज तथा उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज अपनी पावन उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा में वृद्धि कर रहे थे।

प्रारम्भिक प्रार्थनाओं के उपरान्त एकाडेमी के कुल-सचिव श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज ने सभी उपस्थित श्रोताओं का हार्दिक स्वागत किया। श्री स्वामी अखिलानन्द जी महाराज ने कोर्स की रिपोर्ट प्रस्तुत की। तदुपरान्त विद्यार्थियों ने कोर्स सम्बन्धी अपने विचार एवं अनुभव व्यक्त किये। उसके बाद विद्यार्थियों को ज्ञान-प्रसाद और प्रमाण-पत्र दिये गये तथा प्राध्यापक-वर्ग को सम्मानित किया गया।

परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने अपने दीक्षान्त सन्देश में विद्यार्थियों को दिव्य जीवन यापन करने के लिए प्रेरणा देते हुए कहा कि जो-कुछ भी उन्होंने इस एकाडेमी में रहते हुए सीखा है, उसे अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें।

परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज ने अपने आशीर्वचनों में विद्यार्थियों को अपने जीवन का आधार धर्म (सदाचार) को बनाने के लिए कहा। सरस्वती माँ की पूजा तथा प्रसाद-वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

परम पिता परमात्मा तथा सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की कृपा-वृष्टि सब पर हो!

मुख्यालय आश्रम में दृष्टि–दान–यज्ञ

सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की दिव्य कृपा एवं आशीर्वाद से शिवानन्द मिशन, वीरनगर, गुजरात द्वाराह्वह्वदिव्य जीवन संघ मुख्यालय तथा दिव्य जीवन संघ राजकोट शाखा के सहयोग से एवं श्रीमती स्नेहलताबेन शुक्ला की उदार दानराशि से शिवानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय, शिवानन्दनगर, ऋषिकेश में स्वर्गवासी श्री कनुभाई शुक्ला एवं ब्रह्मलीन श्री स्वामी याज्ञवल्क्यानन्द जी महाराज (पूज्य बापू जी) की पावन स्मृति में ६ से १७ अक्तूबर २०११ तकह्वह्वएक नेत्र शिविर आयोजित किया गया।

शिविर का शुभारम्भ प्रार्थना तथा परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज तथा परम पूज्य श्री स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज के आशीर्वाद सहित किया गया। इस दौरान ऋषिकेश के आस–पास के पर्वतीय क्षेत्र में ७ निरीक्षण शिविर तथा ऋषिकेश में दो शिविर लगाये गये। निरीक्षण शिविरों में कुल १०३२ रोगियों की चिकित्सा की गयी, जिनमें से ३९१ रोगी शल्य–चिकित्सा वाले थे, किन्तु इनमें से ३० रोगी उच्च रक्तचाप तथा मधुमेह रोग से ग्रसित होने के कारण शल्य–क्रिया के अनुपयुक्त थे; अतः ३६१ रोगियों की शल्य–चिकित्सा करके 'इन्ट्रा ऑकुलर लैंस' लगाये गये। शल्य–क्रिया विश्वविख्यात शल्य–चिकित्सक एवं सौराष्ट्र केन्द्रीय चिकित्सालय, वीरनगर के सी. एम. ओ., डा॰ सी. एल. वर्मा द्वारा की गयी। उनका सहयोग स्विटज़रलैंड के कुशल नेत्र–विशेषज्ञ, डा. ल्यूकॉस तथा ऋषिकेश के सुप्रसिद्ध शल्य–चिकित्सक, डा. चित्रा सिंह ने किया। आश्रम द्वारा सभी रोगियों तथा उनकी देख–रेख करने आये सम्बन्धियों को निःशुल्क भोजन एवं आवासीय सुविधा प्रदान की गयी। प्रत्येक रोगी को एक–एक कम्बल तथा भोजन करने के बरतन क्रमशः श्रीमती स्नेहलताबेन शुक्ला एवं राजकोट शाखा की उदार धनराशि से दिये गये।

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय सराहना एवं प्रशंसापूर्वक श्रीमती स्नेहलताबेन शुक्ला ने उदार दान के लिए, शिवानन्द मिशन, वीरनगर के गहन एवं समर्पित प्रयत्नों के लिए, राजकोट शाखा के स्वयंसेवकों की अथक सेवाओं के लिए, आश्रम चिकित्सालय के कार्यकर्ताओं तथा अन्य जो भी प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से इस यज्ञ को सफल बनाने में सहयोगी हुए, सभी का हृदय से आभारी है। सर्वशक्तिमान् परमात्मा की अपार कृपा तथा सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज एवं परम श्रद्धेय श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के आशीर्वाद सब पर हों!

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

कामना करने के पूर्व पात्रता अर्जित करो

एक दिन पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज ने एक रोचक कहानी सुनायीह्वह्वएक घमण्डी बन्दर को एक मुकुट मिल गया। उसने मुकुट पहन लिया और अपने को जानवरों का राजा कहने लगा। एक चतुर लोमड़ी ने उसे देखा। उसने सोचा कि वह बन्दर को पाठ पढ़ायेगी। वह बन्दर को एक ऐसे जाल के पास ले गयी जहाँ फल रखे हुए थे। जैसे ही बन्दर ने फलों पर हाथ रखा, वह जाल में फँस गया। वह चिल्लाने लगा। तब लोमड़ी हँसी और बोलीह्वह्व''राजा बनने से पहले राजा के गुण तो अर्जित कर लो।''

यह कहानी सुना कर पूज्य गुरुदेव बोलेह्वह्व''आध्यात्मिक क्षेत्र में भी ऐसा ही होता है। साधक गण शक्ति और पद की कामना करने लगते हैं। वे गुरु बन कर दूसरों पर शासन करना चाहते हैं। विनम्रता, निःस्वार्थता, प्रेम तथा पवित्रता के गुणों को विकसित किये बिना यदि वे आध्यात्मिक गुरु बनना चाहेंगे, तो उनका वही हाल होगा, जैसा बन्दर का हुआ था। दूसरी ओर, यदि साधकों में पर्याप्त आध्यात्मिक शक्ति हो और उनका हृदय शुद्ध हो, तो सारा संसार उनका सम्मान करेगा, भले ही वे सम्मान प्राप्त करने की कामना न करें। साधक को कामना न करके, पात्रता अर्जित करनी चाहिए। उदाहरण के लिए समाधि का अनुभव उसे ही प्राप्त होता है, जो उसकी पात्रता अर्जित कर लेता है। समाधि का अनुभव प्राप्त करने की इच्छा रखने से ही कुछ नहीं होता।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी की शाखाओं के प्रतिवेदन

इम्फाल (मणिपुर): शिवानन्द जयन्ती महोत्सव के अवसर पर 'स्वामी शिवानन्द : उनका मिशन तथा दिव्य दृष्टि' विषय पर राज्य-स्तरीय निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन। प्रथम तथा दशम स्थानों पर मुसलमान विद्यार्थी रहे। यह इस बात का प्रमाण है कि पूज्य गुरुदेव की शिक्षाओं का प्रभाव समाज के सभी वर्गों पर था। ८ सितम्बर को प्रातःकालीन पादुका पूजा तथा अपराह्न में एक सार्वजनिक समारोह। आकाशवाणी द्वारा शाखा के अध्यक्ष प्रोफेसर डा. महेन्द्र सिंह की वार्ता 'स्वामी शिवानन्द का दर्शन' का प्रसारण।

जयपुर (राजस्थान): देवी भागवत कथा (दैनिक); सायंकालीन सत्संग (दैनिक); प्रत्येक बृहस्पतिवार को महामृत्युंजय मन्त्र का जप; प्रत्येक शनिवार को सुन्दरकाण्ड पारायण; प्रत्येक रविवार को प्रातःकालीन सत्संग, हवन तथा स्वाध्याय; प्रत्येक सोमवार को मातृ-सत्संग। शिवानन्द होम्योपैथिक डिस्पेंसरी में गत चार माहों में ३२०६ रोगियों का निःशुल्क उपचार। २८ विधवाओं को १५० रुपये (प्रत्येक) की मासिक आर्थिक सहायता। दैनिक नारायण-भोज। कुष्ठियों की एक कालोनी में अनाज, चीनी, तेल, चायपत्ती आदि की सप्लाई। स्वामी शिवानन्द लाइब्रेरी। जल-सेवा। पूज्य श्री स्वामी भागवतानन्द जी द्वारा २३ जून से ४ जुलाई तक श्रीमद्भगवद्गीता, वेदान्त तथा भक्तियोग विषयों पर प्रवचन। पूज्य स्वामी जी द्वारा मातृ-सत्संग में भी एक प्रवचन। श्री कृष्ण जयन्ती के अवसर पर सत्संग, अर्धरात्रि-आरती तथा प्रसाद-वितरण। पुण्यतिथि के अवसर पर पादुका पूजा तथा महामृत्युंजय मन्त्र का जप।

जाजपुर (ओडिशा): प्रत्येक बृहस्पतिवार को साप्ताहिक सत्संग। शिवानन्द दिवस को प्रातःकालीन सत्र, पादुका पूजा तथा नारायण-सेवा। श्री कृष्ण जयन्ती के अवसर पर प्रातःकालीन प्रार्थना, द्वादशाक्षर मन्त्र जप तथा सायंकाल में विशेष पूजा, कीर्तन। पुण्यतिथि के अवसर पर प्रातःकालीन प्रार्थना, गुरुमन्त्र पाठ, पादुका पूजा, नारायण-सेवा, एक कुष्ठी कालोनी में स्वास्थ्य शिविर, ज्ञान-प्रसाद तथा सायंकालीन सत्संग।

जयपुर (ओडिशा): प्रतिदिन दो बार पूजा; प्रत्येक रविवार और बृहस्पतिवार को सत्संग। शिवानन्द दिवस को हवन और पूजा। ३ जुलाई को शिवानन्द सत्संग भवन के स्थल पर भूमि-पूजन, पादुका पूजा तथा हवन। गुरुपूर्णिमा, आराधना दिवस तथा पुण्यतिथि के अवसरों पर प्रातःकालीन प्रार्थना तथा ध्यान, प्रभातफेरी, पादुका पूजा, प्रवचन, पूजा-आरती, प्रसाद-सेवन (मध्याह्न भोजन)। २४, २८ और ३० जुलाई तथा ८ अगस्त को भक्तों के परिवारों में सत्संग का आयोजन। श्री कृष्ण जयन्ती के अवसर पर पूजा, 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मन्त्र का संकीर्तन, हवन, श्रीमद्भागवत के कुछ अंशों का पाठ तथा मध्यरात्रि-आरती, जन्मोत्सव, प्रसाद-सेवन।

कंटाबांजी (ओडिशा): प्रत्येक रविवार को सत्संग। श्री कृष्ण जयन्ती के अवसर पर विशेष सत्संग।

खातिगुडा (ओडिशा): दिन में दो बार पूजा; प्रत्येक बृहस्पतिवार को सत्संग, एकादशी को सत्संग तथा श्री विष्णुसहस्रनाम स्तोत्र पारायण; साधना दिवस ७ अगस्त (प्रत्येक माह का प्रथम रविवार) को १२ घण्टे का अखण्ड महामन्त्र कीर्तन तथा नारायण-सेवा। श्री कृष्ण जयन्ती के अवसर पर विशेष सत्संग तथा श्रीमद्भागवत के कृष्ण-जन्म से सम्बन्धित अध्याय का पाठ। पुण्यतिथि के अवसर पर प्रातःकालीन प्रार्थना-ध्यान, प्रभातफेरी, पादुका पूजा, नारायण-सेवा, भण्डारा, १२ घण्टों तक महामृत्युंजय मन्त्र का अखण्ड जप तथा सायंकालीन सत्संग।

खुर्दा रोड, जतनी (ओडिशा): पुण्यतिथि दिवस को गत तीन दिनों से होने वाली घनघोर वर्षा अचानक प्रातःकाल ५ बज कर १५ मिनट पर रुक गयी तथा ५.३० बजे (प्रातः) से पूर्व-निश्चित कार्यक्रम प्रारम्भ हो गये। इस अवसर पर प्रार्थना, ध्यान, जप, स्वाध्याय, पादुका पूजा, भक्ति-संगीत, नारायण-भोज (कुष्ठियों के लिए) प्रसाद-सेवन, सायंकालीन सत्संग के

कार्यक्रम आयोजित किये गये। भक्तों ने स्वामी शिवानन्द जी महाराज के जीवन तथा उपदेशों पर अपने-अपने विचार भी प्रस्तुत किये।

खुर्जा (उत्तर प्रदेश): सत्संग, स्वाध्याय तथा सत्संग के रविवारीय कार्यक्रम; पुरुषों के लिए प्रातःकालीन तथा महिलाओं के लिए सायंकालीन योगासन कक्षाएँ (दैनिक); प्रत्येक रविवार को पुरुषों के लिए ध्यान की कक्षाएँ। श्री स्वामी देवानन्द होम्योपैथी क्लीनिक में पूर्ववत् निःशुल्क उपचार सेवा। राष्ट्रीय आचार संहिता तथा अन्य ज्ञान-प्रसाद का वितरण।

नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़): ब्राह्ममुहूर्त सत्र (दैनिक), सायंकालीन सत्संग (दैनिक), प्रत्येक बृहस्पतिवार को परिवारों में सत्संग कार्यक्रम; प्रत्येक शनिवार को मातृ-सत्संग में सुन्दरकाण्ड पारायण, प्रत्येक एकादशी को श्री विष्णुसहस्रनाम तथा श्रीमद्भगवद्गीता का पाठ; प्रत्येक माह की ३ तारीख को महामन्त्र का अखण्ड कीर्तन। शिव अभिषेक्ह्ह१ अगस्त तथा ८ अगस्त को शाखा परिसर में; ८ अगस्त को भिलाई और अहिवारा शाखाओं में भी। श्री कृष्ण जयन्ती के अवसर पर द्वादश मन्त्र-जप तथा मध्यरात्रि तक भजन-कीर्तन। पुण्यतिथि के अवसर पर हवन। ७ तथा १४ अगस्त को शिवानन्द भजन मन्दिर, भिलाई में दो विशेष सत्संग कार्यक्रम।

रायपुर (छत्तीसगढ़): प्रत्येक एकादशी को विशेष सत्संग, तुलसीदल की एक लाख अर्चना तथा श्रीविष्णुसहस्रनाम पाठ के साथ नारायण-पूजा, श्री लक्ष्मी के १०८ नामों के साथ लक्ष्मी पूजा तथा श्री रामायण संकीर्तन। श्री कृष्ण जयन्ती के अवसर पर ७ घण्टों तक चलने वाले सायंकालीन सत्संग में 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मन्त्र का ३ घण्टे तक जप। प्रत्येक माह शिवचतुर्दशी को रुद्राभिषेक।

सालेपुर (ओडिशा): प्रातःकालीन पूजा, प्रार्थना, ध्यान; सायंकालीन पूजा, स्वाध्याय आदि (दैनिक); दैनिक सायंकालीन सत्संग में भजन। प्रथम रविवार को श्रीमद्भगवद्गीता पारायण, दूसरे रविवार को योगासन प्रशिक्षण, तीसरे रविवार को साधना दिवस, अन्तिम दो रविवारों को विशेष सत्संग। १०३ रोगियों की उपचार-सेवा। ५१ प्रतिभागियों को योग-शिक्षा। ३ जुलाई को श्री जगन्नाथ पूजा। श्री गुरुपूर्णिमा के अवसर पर पादुका पूजा तथा विशेष सत्संग। आराधना दिवस के अवसर पर पादुका पूजा तथा विशेष सत्संग। २४ जुलाई को महामन्त्र कीर्तन ६ घण्टों तक।

साउथ बलंडा (ओडिशा): दिन में दो बार दैनिक पूजा; प्रत्येक शुक्रवार को सत्संग; शिवानन्द दिवस के अवसर पर प्रातःकालीन पादुका पूजा तथा सायंकालीन विशेष सत्संग; संक्रान्ति दिवस के अवसर पर महामृत्युंजय मन्त्र-जप तीन घण्टों तक। श्री कृष्ण जयन्ती के अवसर पर 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मन्त्र का अखण्ड जप (बारह घण्टों तक), रात्रिकालीन सत्संग, विशेष पूजा, मध्यरात्रि-आरती। पुण्यतिथि के अवसर पर साधना सप्ताह (२२ से २७ अगस्त)ह्वह्वइस अवधि में प्रतिदिन विशेष सत्संग तथा स्वाध्याय। २५ अगस्त को महामन्त्र का अखण्ड कीर्तन ३ घण्टों तक। पुण्यतिथि के अवसर पर ब्राह्ममुहूर्त सत्र, प्रभातफेरी, पादुका पूजा, भजन-समारोह ढाई घण्टों तक, स्वामी जी महाराज पर प्रवचन, प्रसाद-सेवन, एक कुष्ठी कालोनी में सूखे राशन की सप्लाई तथा धन-दान, सायंकालीन वीडियो सत्संग।

सुनाबेडा (ओडिशा): प्रत्येक बृहस्पतिवार तथा रविवार को सत्संग तथा स्वाध्याय। श्री कृष्ण जयन्ती के अवसर पर प्रातःकालीन पादुका पूजा तथा हवन और सायंकालीन सत्र में पूजा, अभिषेक, आरती, भजन, संकीर्तन, श्रीमद्भागवत के कुछ अंशों का पाठ। मध्यरात्रि आरती आदि। पुण्यतिथि के अवसर पर पूर्वाह्न में पादुका पूजा, हवन, भजन तथा सायंकाल में विशेष सत्संग तथा स्वाध्याय।

सुनाबेडा महिला शाखा (ओडिशा): प्रत्येक बुधवार तथा शनिवार को सत्संग; प्रत्येक रविवार को बच्चों के लिए सत्संग; दैनिक प्रातःकालीन पूजा, श्रीमद्भागवत-पाठ, मन्त्र-जप तथा प्रतिदिन शाम को महामन्त्र कीर्तन, गीता-पाठ, मन्त्र-जप। प्रत्येक एकादशी को पादुका पूजा तथा श्री विष्णुसहस्रनाम स्तोत्र पारायण। चिदानन्द दिवस के अवसर पर महामृत्युंजय मन्त्र का अखण्ड जप १२ घण्टों तक। संक्रान्ति दिवस के अवसर पर श्री हनुमान चालीसा के ११ आवर्तन। प्रत्येक मंगलवार को

नारायण-सेवा। ४ अगस्त से ४ सितम्बर तक श्रीमद्भागवत पारायण (प्रातःकाल में)। श्रीमती कमल पाणिग्रही द्वारा प्रवचन (सायंकाल में)। श्री कृष्ण जयन्ती के अवसर पर प्रातःकालीन विशेष पूजा तथा पादुका पूजा; सायंकालीन सत्र में द्वादश अक्षरी मन्त्र का जप (१२ घण्टों तक), कीर्तन, श्रीमद्भागवत पाठ, पूजा, अभिषेक, विशेष अर्चना, मध्यरात्रि-आरती, पुण्यतिथि के अवसर पर पादुका पूजा तथा विशेष सत्संग।

सुरेन्द्रनगर (गुजरात): दैनिक सत्संग, प्रातःकालीन उपनिषद् कक्षाएँ, सायंकालीन भगवद्गीता कक्षाएँ। प्रत्येक शनिवार को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण तथा प्रत्येक रविवार को श्री रामायण पर प्रवचन। १५ अगस्त को एक प्रवचन।

वाराणसी (उत्तर प्रदेश): १४ तथा २८ अगस्त को पाक्षिक सत्संग तथा स्वाध्याय।

विक्रमपुर (ओडिशा): दिन में दो बार दैनिक पूजा; प्रत्येक बुधवार को साप्ताहिक सत्संग; शिवानन्द दिवस के अवसर पर पादुका पूजा। पुण्यतिथि के अवसर पर प्रातःकालीन सत्र, 'ॐ नमो भगवते चिदानन्दाय' मन्त्र के साथ एक सहस्र आहुतियों से पादुका पूजा, अखण्ड कीर्तन (तीन घण्टों तक), प्रवचन, प्रसाद-सेवन तथा विशेष सत्संग।

वाबगाई (मणिपुर): श्री कृष्ण जयन्ती के अवसर पर भगवान् कृष्ण के विग्रह का विशेष शृंगार; भगवान् श्री कृष्ण के प्राकट्य तथा कंस-वध प्रसंग तक उनकी लीलाओं का वर्णन।

पुण्य स्मृति में

अत्यन्त गहरे अभाव तथा गहन शोक के साथ हम डा. श्रीमती मधु सिंघल के २२ सितम्बर २०११ को मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश) में हुए दुःखद निधन का समाचार दे रहे हैं।

श्रीमती मधु सिंघल, जो कि एक सुप्रसिद्ध स्त्रीरोग विशेषज्ञ तथा 'लैपरोस्कोपिक सर्जन' थीं, हमारे आश्रम की विशेष रूप से भक्त थीं और 'शिवानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय' में अथक एवं समर्पित सेवाएँ अपने पति डा. जी. एम. सिंघल के साथ १९९८ से दे रही थीं।

उनका जन्म १९४७ में बुल्लनसर (उत्तर प्रदेश) में श्री रत्न प्रकाश मंगल एवं श्रीमती आशा मंगल के घर हुआ। दिल्ली के लेडी हार्डिंग मेडिकल कालेज' में एम. बी. बी. एस. करने के बाद आगे उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए अपने पति सहित १९७१ में इंग्लैंड चली गयीं। १९७८ में वापस लौटने पर उन्होंने अपने श्वसुर श्री जनार्दन स्वरूप सिंघल के मुजफ्फरनगर में स्थित 'नर्सिंग होम' में सेवाएँ देनी आरम्भ कर दीं और शीघ्र ही अपने मधुर एवं करुणापूर्ण स्वभाव तथा समर्पित सेवाओं के कारण अत्यन्त लोकप्रिय हो गयीं। १९८४ में उन्होंने अपने पति के साथ अपना 'नर्सिंग होम' प्रारम्भ किया।

'मानवता की सेवा भगवान् की पूजा है' ह्रह्मसद्गुरुदेव की इस उदात्त उक्ति के प्रेरित हो कर उन्होंने १९९८ से आश्रम के धर्मार्थ चिकित्सालय में सेवाएँ देनी आरम्भ कर दीं तथा निर्धन रोगियों ने (स्वर्गीय) डा. देवकी कुट्टी माता जी के बाद इनमें अपना दूसरा मसीहा पाया।

गत दो वर्षों से वह कैंसर रोग से ग्रस्त थीं। स्वास्थ्य ठीक न होते हुए भी उनके द्वारा पीड़ित रोगियों के प्रति सेवा चलती रही। २२ सितम्बर २०११ को प्रातः ३ बज कर १८ मिनट पर उन्होंने अन्तिम श्वास लिया।

उनकी आत्मा सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज तथा परम पिता परमात्मा के पावन चरणों में शाश्वत परम शान्ति प्राप्त करे!

सूचना

३४ वाँ ओडिशा दिव्य जीवन संघ आध्यात्मिक सम्मेलन एवं युवा शिविर

परम श्रद्धेय गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की अपार अनुकम्पा से ३४ वें ओडिशा दिव्य जीवन संघ आध्यात्मिक सम्मेलन तथा ७ वें युवा शिविर का आयोजन २९ दिसम्बर २०११ से १ जनवरी २०१२ तक भंज भवन, सेक्टर-५, राउरकेला, जिला सुन्दरगढ़, ओडिशा में किया जायेगा।

सम्मेलन में दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के अनेक सन्त तथा अन्य आश्रमों से पधारे प्रबुद्ध जन आशीर्वचन प्रदान करेंगे। संघ की समस्त शाखाओं के भक्त आध्यात्मिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार तथा विश्व-शान्ति की ओर अग्रसर करने वाले इस कार्यक्रम में प्रतिभागिता के लिए सादर आमन्त्रित हैं।

१. प्रतिनिधि शुल्कह्लह्लरुपये ३५०/- प्रति व्यक्ति (भोजन तथा ठहरने की व्यवस्था सहित; व्यवस्था केवल २५०० प्रतिभागियों के लिए सीमित)

२. युवा शिविर रजिस्ट्रेशन शुल्कह्लह्लरुपये ५१/- (केवल ५०० युवाओं के लिए सीमित)

३. युवा शिविर की आयु-सीमाह्लह्ल१४ से २१ वर्ष (पहचान-पत्र लाना आवश्यक है)

४. आवेदन-पत्र पहुँचने की अन्तिम तिथिह्लह्ल३० नवम्बर २०११

समस्त धनराशि बैंक ड्राफ्ट अथवा चेक के द्वारा **"The Divine Life Society, Rourkela Branch"** के नाम से भेजें। ड्राफ्ट अथवा चेक का देय State Bank of India, Rourkela Evening Branch (Code No. 2112) में होना चाहिए।

पंजीकरण तथा अन्य सूचना के लिए सम्पर्क करें :

१. रबीन्द्र कुमार पंडब, प्रमुख आयोजक, मोबाइल नं. ०९९३७३९८९९६; २. नृसिंह चरण दास, सचिव, मोबाइल नं. ०९४३७२४४७७७, शिवानन्द आश्रम, M/4, फ़ेज़ह्ल, छेंद, राउरकेलाह्ल७६९०१५, जिला : सुन्दरगढ़, ओडिशा; ३. जयचन्द्र नायक, मोबाइल नं. ०९४३८८४९०४९; ४. बिप्र चरण पात्र, मोबाइल नं. ०९४३७०७८०४१

सूचना

दिव्य जीवन संघ, पश्चिम बंगाल   साधना शिविर

दिव्य जीवन संघ, पश्चिम बंगाल का वार्षिक साधना शिविर २१ से २५ जनवरी २०१२ तक श्री काशी विश्वनाथ समिति कॉम्प्लैक्स, हामिरागाच्छी, रेलवे स्टेशनह्लह्लमालिया, पश्चिम बंगाल में होगा।

पंजीकरण राशिह्लह्लपश्चिम बंगाल के प्रतिनिधियों के लिए ₹३००/- प्रति व्यक्ति तथा अन्य राज्यों से आने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए ₹१००/- होगी।

नामांकन की अन्तिम तिथि ३१ दिसम्बर २०११ है तथा नामांकन के लिए फार्म **श्री विजय स्वाँई, ४ सी, मेहेर अली मंडल स्ट्रीट, मोमिनपुर, कोलकाता   ७०० ०२७, पश्चिम बंगाल** को भेजने होंगे।

नामांकन तथा अन्य जानकारी हेतु सम्पर्क-सूत्र :

डा. पी. के. सामन्तरे, मो. नं. ०९००२०८०५१४; श्री सी. बी. सहगल, मो. नं. ०९८३०१४४१४७; श्री नितुल पारिख, मो. नं. ०९८३००४०७३०; श्री प्रफुल्ल महापात्र, मो. नं. ०९४३८३०३६२४ और श्री विजय स्वाँई, मो. नं. ०९३३९३९२८४५

सभी भक्तों से अनुरोध है कि शिविर में भाग लें।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

सूचना

अखिल आन्ध्र द डिवाइन लाइफ सोसायटी का ३८ वाँ आध्यात्मिक सम्मेलन

परम पूज्य श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की अपार कृपा से अखिल आन्ध्र द डिवाइन लाइफ सोसायटी का ३८ वाँ आध्यात्मिक सम्मेलन १८ से २० जनवरी २०१२ तक गोदावरी नदी के तट पर स्थित सुप्रसिद्ध 'मन्दिर नगर' (टैम्पल टाउन) भद्राचलम् में होगा। सम्मेलन के लिए निर्धारित स्थानह्वश्री स्वामी वारी कल्याण मण्डपम्, श्री रामचन्द्र स्वामी देवस्थानम्, भद्राचलम्, आन्ध्र प्रदेश है।

इस सम्मेलन में मुख्यालय आश्रम के वरिष्ठ सन्त तथा अन्य स्थानीय संस्थाओं से विद्वज्जन पधारेंगे। आध्यात्मिक ज्ञान के प्रचार के उद्देश्य से किये जा रहे इस सम्मेलन में द डिवाइन लाइफ सोसायटी की सभी शाखाओं के भक्त सदस्य सादर आमन्त्रित हैं।

सम्मेलन में सम्मिलित होने का प्रतिनिधि-शुल्क य ११६/- (भोजन एवं आवासीय सुविधा सहित) रखा गया है, जिसे कृपया डिमाण्ड ड्राफ्ट अथवा मनिआर्डर द्वारा 'द डिवाइन लाइफ सोसायटी, ए/सी., सरपका (डीरेरज़िर)' पर देय तथा 'कोषाध्यक्ष, डी एल एस कान्फ्रेंस, भद्राद्री, शिवानन्द आश्रम, आर. टी. सी. काम्प्लेक्स के पीछे, भद्राचलमह्वह्व५०७१११, आन्ध्र प्रदेश' पर भेजें।

सम्पर्क सूत्रह्वह्व

१. श्री स्वामी प्रकाशानन्द, रेज़िडेंट, स्टेट कमेटी, मो. नं. ०९७०१२६९१९९

२. श्री जी. नागेश्वर राव, सचिव, मो. नं. ०९८४८७४९३३९

३. श्री च. सुब्रमनियन्, कोषाध्यक्ष, मो. नं. ०९८४९१७२२१८

४. श्री जी. सत्यनारायण, सह सचिव, मो. नं. ०९९४९८७९२०६

५. श्री पी. वेंकट राजु, सह कोषाध्यक्ष, मो. नं. ०९२९३७१७४६३

६. श्री के. वीर स्वामी, कोआर्डिनेटर (समन्यक), मो. नं. ०९९४९१९०८२७

सभी भक्तों से निवेदन है कि इस सम्मेलन में भाग ले कर इसे सफल बनायें।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

शिवानन्द-वाणी

यह जगत् का दृश्य माया की शक्ति के कारण स्थित है। माया-शक्ति के द्वारा परब्रह्म सदा निर्विकार रहते हुए भी हम सभी के लिए सदा परिवर्तनशील, देश-काल-परिच्छिन्न दृश्य-परम्परा के रूप में प्रतीत होता है।

यह जगत् माया द्वारा निर्गुण ब्रह्म का प्रतीयमान रूपान्तरण है।

सृष्टि तथा प्रलय ईश्वर में निहित माया-शक्ति के द्वारा ही सम्भव हैं।

ब्रह्म निर्विशेष तथा अव्यय है। ईश्वर तो स्वतः माया से उत्पन्न है।

ईश्वर जगत् का शासन एवं नियन्त्रण करता है। सार्वभौमिक रूप में वह सभी का स्वामी, सर्वज्ञ, नियामक, अन्तर्यामी तथा सभी की उत्पत्ति, स्थिति एवं प्रलय का कारण है। उसे ईश्वर कहते हैं।

ईश्वर माया से उपाधित है। वह समस्त जगत् का स्रष्टा, पालक तथा संहारक है। वह माया-शक्ति के द्वारा इन कार्योंह्वको करता है।